विवरणिका व नियमावली

विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) / विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) कार्यक्रम

2017-18

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

क्रम संख्या - 56

पंजीकृत संख्या-यू.ए./बी.एन.-30/03
(आईसन्स टू पोस्ट विदाउट प्रीपेमेंट)

सरकारी गजट, उत्तरांचल

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित

असाधारण

विधायी परिशिष्ट

भाग-1, खण्ड(क)

(उत्तरांचल अधिनियम)

देहरादून, बृहस्पतिवार, 21 अप्रैल 2005 ई.

बैशाख 01, शक सम्वत् 1027

उत्तरांचल शासन

विधायी एवं संसदीय कार्य विभाग

संख्या 486/विधायी एवं संदीय कार्य/2005

देहरादून, 21 अप्रैल 2005

अधिसूचना

विविध

''भारत का संविधान'' के अनुच्छेद 200 के अधीन राज्यपाल महोदय ने उत्तरांचल विधान सभा द्वारा पारित उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आवेश, 2001) (तृतीय संशोधन) विधेयक, 2005 पर श्री राज्यपाल ने दिनांक 20.04.2005 को अनुमति प्रदान की और वह उत्तरांचल अधिनियम संख्या 17, सन् 2005 के रूप में सर्वसाधारण के सूचनार्थ एवं अधिसूचना द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (तृतीय संशोधन) अधिनियम, 2005

(अधिनियम सं. 17, वर्ष 2005)

उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) में अग्रेत्तर संशोधन करने के लिए

अधिनियम

भारत गणराज्य के छप्पनवें वर्ष में उत्तरांचल विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में वह अधिनियम हो :-

1-(1) यह अधिनियम उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय, अधिनियम 1973 संक्षिप्त नाम 1973)

(अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश, 2001) (तृतीय संशोधन) अधिनियम, 2005 एवं प्रधान कहा जायेगा।

मूल अधिनियम - 2. उत्तरांचल (उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, या संशोधन 1973) (अनुकूलन एवं उपान्तरण आदेश 2001), जिसे यहां मूल अधिनियम कहा गया है, मैं जहां-जहां 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय' शब्द आतेहैं, वहां उन शब्दों कै स्थान पर 'उत्तरांचल संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार शब्द रखे जायेंगे।

आज्ञा से

आई.जे. मल्होत्रा,

प्रमुख सचिव

No, 488 Nidhayee & Sansadiya Karya/2005

Dated Dehradun, April 21, 2005

NOTIFICATION

Miscellaneous

In pursuance of the provision of clause (3) of Ariicle 348 of the India the Governor is pleased to order the publication of the following English of The Uttaranctial (The Uttar Pradesh State University Act, 1973) (Adaptation and Modification Order, 2001) (third amendment) Bill, 2005 (Uttaranchal Adhiniyam Sankhya 17 of 2005).

As passed by the Uttaranchal Legislative and assented and assented to by the Governor on 20.04.2005.

THE UTTRANCHAL (THE UTTAR PRADESH STATE UNIVERSITY ACT, 073)(ADAPTAT JON AND MODIFICATION ORDER, 2001) (THIRD AMENDMENT) Act 2005

(Act no. 17 of 2005)

Further to amend the Uttaranchal (The Uttar Pradesh State University Act, 1973) (Adaptation and Modification Order, 2001).

AN ACT

Be it enacted by the State Assembly of Uttaranchal in the Fifty-sixth year of the· Republic of India as follows:

Short UUe & 1-(1) This Act may be the called The Uttaranchal. (The Uttar Commencement Pradesh State University Act, 1973) (Adaptation and Modification Order, 2001) (third amendment) Bill, 2005 (Uttaranchal Adhiniyam Sankhya 17, 2005).

2- It shall come into force on such date as the State date as the State Government may, be notification in the official Gazette appoint.

Amendment 2- In The Uttaranchal (The Uttar Commencement Pradesh State University Act, 1973) (Adaptation and Modification Order, 2001), herein after referred to as principal Act wherever the expression "Sampurnanand Sanskrit University" occurs, the word 'Uttaranchal Sanskrit University, Haridwar shall be substituted.

By. Order

I.J. MALHOTRA

Principal Secretor

पी.एस.यू.(आर.ई) 18 विधायी/158-2006-83+300 (कम्प्यूटर कीजियी।

प्रमुख तिथियां एवं विवरण

आवेदन उपलब्ध होने की तिथि	:	दिनांक 27 फरवरी, 2017
आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम	:	दिनांक 20 मार्च, 2017
परीक्षा की तिथि एवं समय	:	दिनांक 05 अप्रैल, 2017 (प्रात: 11.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे तक)
प्रवेश परीक्षा केन्द्र	:	उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आवेदन पत्र/परीक्षा शुल्क

सामान्य श्रेणी और अन्य पिछड़े वर्ग के अभ्यर्थियों	:	रूपये 1000/-
अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति	:	रूपये 500/-

शुल्क भुगतान

विश्वविद्यालय कार्यालय में आवेदन पत्र /परीक्षा शुल्क नकद जमा कर अथवा किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा जारी डिमाण्ड ड्राफ्ट जो ''वित्त नियंत्रक, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार'', के पक्ष में हरिद्वार में देय होगा, को भेजकर भी प्राप्त किया जा सकता है। डाक द्वारा आवेदन पत्र प्राप्त करने के लिये रूपये 50/- अतिरिक्त देय होगा। अभ्यर्थी डिमाण्ड ड्राफ्ट के पीछे अपना नाम, पता तथा विषय व विषय कोड अनिवार्य रूप से अंकित करें। आवेदन पत्र/परीक्षा शुल्क किसी भी दशा में न तो वापस किया जायेगा और न ही उसे किसी दूसरी उपाधि के लिये स्वीकृत माना जायेगा।

आवेदन पत्र प्रेषण

पूरित आवेदन पत्र विश्वविद्यालय कार्यालय में प्राप्त होने की अन्तिम तिथि दिनांक 20 मार्च, 2017, सायं 5.00 बजे तक है। उक्त तिथि के उपरान्त प्राप्त आवेदन पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे। पूरित आवेदन पत्र स्पीड पोस्ट/रजिस्टर्ड डाक द्वारा अथवा स्वयं निम्न पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

कुलसचिव
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग
बी.एच.ई.एल. मोड़, बहादराबाद
हरिद्वार - 249402 (उत्तराखण्ड)

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) प्रवेश परीक्षा हेतु विषय

कोड संख्या	मुख्य विषय	मुख्य विषय के संबद्ध विषय निम्नवत है
यूएसयू-11	व्याकरण	नव्य व्याकरण, प्राच्य व्याकरण
यूएसयू-12	साहित्य	-
यूएसयू-13	ज्योतिष	सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष
यूएसयू-14	योग	-
यूएसयू-15	हिन्दी एवं भाषा विज्ञान	-
यूएसयू-16	शिक्षाशास्त्र	-

नोट :

1. परीक्षा परिणाम की घोषणा विश्वविद्यालय बेबसाइट www.usvv.ac.in एवं सूचनापट्ट पर प्रकाशित की जायेगी।
2. PET केवल विश्वविद्यालय (पी-एच.डी.) में प्रवेश के लिए मान्य है। PET उत्तीर्ण अभ्यर्थी की पात्रता केवल वर्तमान सत्र के लिये ही मान्य होगी, जो अभ्यर्थी PET उत्तीर्ण करेंगे, उन्हीं को साक्षात्कार हेतु आमंत्रित किया जायेगा।
3. अभ्यर्थी का चयन उसके शोध क्षेत्र विषय पर विचार-विमर्श तथा साक्षात्कार के आधार पर ही किया जायेगा। कोई भी अभ्यर्थी यदि अपने साक्षात्कार और शोध क्षेत्र विषय के अनुरूप उपयुक्त नहीं पाया जाता है, तो स्थान को रिक्त रखा जायेगा।

अनुक्रमणिका

विवरण	पृष्ठ संख्या
विश्वविद्यालय–एक परिचय	01
उपलब्ध सुविधायें	02
विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) उपाधि के लियं पंजीकरण की अर्हता	02
आरक्षण	02
विद्यावारिधि प्रवेश की प्रक्रिया	03
प्रवेश परीक्षा (PET) का स्वरूप	03
प्रवेश पत्र	03
साक्षात्कार हेतु प्रपत्रों की सूची	04
एकसत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स–वर्क)	04
शोध समिति	04
विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) निर्देशन के लिये निर्देशक/सह निर्देशक की योग्यता	04
प्रगति पत्र का प्रस्तुतिकरण	05
शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण	05
शोध प्रबन्ध का परीक्षण	05
विभागों के कोड तथा उपलब्ध सीटों की संख्या	06
विद्यावारिधि (पी–एच.डी.) हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम	07–18
संकाय सदस्यों की सूची	19
शैक्षणिक कलैण्डर	20
शुल्क विवरण	20–21

विश्वविद्यालय - एक परिचय

स्थापना

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध भाषाओं में से एक है। संस्कृत प्राचीन ज्ञान विज्ञान का भंडार एवं हमारी भारतीय परंपरा का प्रतीक है। संस्कृत और प्राच्य विद्याओं के प्रचार-प्रसार तथा उन्हें आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़ने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड सरकार द्वारा अधिसूचना संख्या 486/विधायी एवं संसदीय कार्य/2005 दिनांक 21 अप्रैल, 2005 द्वारा उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

विश्वविद्यालय का परिसर हरिद्वार शहर से लगभग 15 किलोमीटर दूर बहादराबाद क्षेत्र में स्थित है, जिसका प्राकृतिक सौन्दर्यमय वातावरण शिक्षकों और छात्रों को सदैव आत्मबोध और सीखने के लिये प्रेरित करता है।

वर्तमान समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत और प्राच्य विद्याओं से संबंधित ऐसे पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है जो रोजगार से भी जुड़े हुए हैं। इसको ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय में प्राच्य तथा आधुनिक विद्याओं से सम्बन्धित विभिन्न उपाधि पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य संस्कृत तथा प्राच्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार, विकास और प्रोत्साहन है, इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं :

(i) प्राच्य-पाश्चात्य ज्ञान - विज्ञान का समन्वय।

(ii) प्राच्य भाषाओं एवं तत्सम्बन्धी विभिन्न विषयों के अध्ययन-अध्यापन परम्परा का निर्वहन

(iii) शिक्षण-प्रशिक्षण तथा पाण्डुलिपिविज्ञान का संरक्षण।

(iv) पालि और प्राच्य भाषाओं का संरक्षण तथा संवर्धन।

(v) संस्कृत विद्या की सभी विधाओं में अनुसंधान, प्रोत्साहन और संयोजन करना।

(vi) व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत के विकास व प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास।

(vii) प्रदेश के विविध भागों में परिसरों की स्थापना, महाविद्यालयों का अधिग्रहण और संचालन।

(viii) संस्कृत के संवर्धन के लिए प्रदेश सरकार के राज्यीय अधिकरण के रूप में, उसकी नीतियों और योजनाओं का क्रियान्वयन।

(ix) शैक्षणिक क्षेत्रों में अनुदेशन और प्रशिक्षण का प्रबन्ध करना।

(x) शोध ज्ञान के प्रचार और विकास के लिए समुचित मार्गदर्शन तथा व्यवस्था करना।

(xi) भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से सृजनपीठों, शोधपीठों तथा अध्ययनपीठों की स्थापना।

(xii) भारतीय संस्कृति और साहित्य के साथ अन्य संस्कृतियों का तुलनात्मक तथा समीक्षात्मक अध्ययन और अनुसंधान।

(xiii) छात्र-छात्राओं के उत्थान में शैक्षणिक गतिविधियों और सांस्कृतिक पक्षों का निष्पादन।

(xiv) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, कार्यशाला, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और जिज्ञासुओं का आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ प्रशिक्षण।

(xv) संस्कृत साहित्य का व्यापक अध्ययन और अनुसंधान।

परिकल्पना (विजन)

(i) आगामी पांच वर्ष में राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान वाले विश्वविद्यालय के रूप में विकसित होना। साथ ही 'ज्ञान आधारित समाज' (नॉलेज सोसायटी) के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाना।

(ii) आंतरिक गुणवत्ता विनिश्चय प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी.सेल) की स्थापना।

(iii) राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में बौद्धिक/योग/सांस्कृतिक/क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को पुरस्कार प्रदान करना।

(iv) मौलिक शोध ग्रन्थों और अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका का सम्पादन तथा प्रकाशन।

(v) छात्रों की सुविधा के लिए छात्रावास व्यवस्था, जिसका निर्माण कार्य प्रगति पर है।

संचालन संरचना

विश्वविद्यालय का संचालन अधोलिखित रूप से किया जाता है :

(i) कुलाधिपति (ii) कार्यपरिषद

(iii) विद्यापरिषद (iv) वित्त समिति

(v) परीक्षा समिति

अन्य राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों के समान उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के भी कुलाध्यक्ष/कुलाधिपति माननीय राज्यपाल हैं। कार्यपरिषद विश्वविद्यालय की सर्वश्रेष्ठ नीतिगत निर्णयों के क्रियान्वयन करने हेतु अधिकार सम्पन्न परिषद् है। विश्वविद्यालय के

कुलपति इस परिषद के पदेन अध्यक्ष होते हैं। शिक्षा, शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान आदि के मानकों का निर्धारण विद्यापरिषद द्वारा होता है। विश्वविद्यालयीय वित्तीय गतिविधियों का संचालन, वार्षिक आय-व्यय का निर्धारण वित्त समिति द्वारा किया जाता है और परीक्षा समिति परीक्षाओं का आयोजन कराती है।

पदाधिकारी

कुलाधिपति	:	डॉ. कृष्ण कान्त पॉल (महामहिम राज्यपाल, उत्तराखण्ड)
कुलपति	:	प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित
कुलसचिव	:	गिरीश कुमार अवस्थी
वित्त नियंत्रक	:	श्री तंज़ीम अली

उपलब्ध सुविधायें

केन्द्रीय पुस्तकालय

केन्द्रीय पुस्तकालय का संचालन विश्वविद्यालय की स्थापना के समय से ही किया जा रहा है। पुस्कालय में वेद, वेदांग, संस्कृत साहित्य, संस्कृत व्याकरण, दर्शन, शिक्षाशास्त्र, प्राच्य विद्या, काव्यशास्त्र, भाषा विज्ञान/हिन्दी व अंग्रेजी से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों का विशाल संग्रह है। पुस्तकालय में विभिन्न शैक्षिक और अनुसंधान की आवश्यकता को पूर्ण करने वाली शोध पत्रिकाओं और शोधग्रन्थों की व्यवस्था भी है।

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.)

प्राचीन तथा पिछड़े क्षेत्रों तथा छात्रो के सम्पूर्ण विकास व सहायता के लिये विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का भी संचालन किया जा रहा है। इसका संचालन स्नातक तथा शिक्षाशास्त्री (बी.एड.) स्तर पर राज्य सरकार के सहयोग में किया जाता है।

कम्प्यूटर प्रयोगशाला

छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय द्वारा कम्प्यूटर प्रयोगशाला का भी संचालन किया जा रहा है, जिसमें आधुनिक उपयोग के लिये सभी प्रकार के सॉफ्टवेयर का संग्रह है तथा इसमें इन्टरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है।

परामर्श एवं निर्देशन प्रकोष्ठ

विश्वविद्यालय द्वारा परामर्श एवं निर्देशन प्रकोष्ठ की स्थापना की गयी है। यह प्रकोष्ठ निरन्तर छात्रों को साक्षात्कार एवं रोजगार से सम्बन्धित दिशानिर्देशों को समय-समय उपलब्ध कराता है।

शोध छात्रवृत्ति

विश्वविद्यालय द्वारा शोध छात्रवृत्ति यू.जी.सी. द्वारा संचालित नेट अथवा जे.आर.एफ. उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को यू.जी.सी. के दिशानिर्देश के आधार पर प्रदान की जायेगी। शोधकर्ता राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली की छात्रवृत्तियों के लिये भी आवेदन कर सकता है।

शोध पत्रिका

विश्वविद्यालय द्वारा 'शोध प्रज्ञा' नाम से अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका प्रकाशित की जाती है। इस शोध पत्रिका में प्राच्य एवं आधुनिक ज्ञान के समन्वय पर केन्द्रित शोध पत्रों को प्रकाशित किया जाता है। यह मूल्यांकन शोध पत्रिका है।

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)/ विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) उपाधि के लिये पंजीकरण की अर्हता

विधि द्वारा स्थापित और यू.जी.सी से मान्यता प्राप्त किसी भी विश्वविद्यालय, मानित विश्वविद्यालय अथवा निजी विश्वविद्यालय से मूल या संबद्ध विषय में आचार्य अथवा समकक्ष स्नातकोत्तर उपाधि न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ प्राप्त की हो। विदेशी विश्वविद्यालयों से प्राप्त ऐसी स्नातकोत्तर उपाधि भी मान्य होगी, जिसे भारत में समकक्ष उपाधि माना गया है।

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)/विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) लिखित प्रवेश परीक्षा में वे छात्र भी सम्मिलित हो सकेंगे, जो स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष में अध्ययनरत हैं या जिन्होंने स्नातकोत्तर की अन्तिम वर्ष की परीक्षा दी है, लेकिन उनका परिणाम साक्षात्कार के दिन तक घोषित नहीं हुआ है। ऐसे छात्रों के लिए विद्यावारिधि के साक्षात्कार से पूर्व अपनी अर्हता परीक्षा (आचार्य या स्नातकोत्तर में वांछित प्रतिशत के साथ) का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।

1. आरक्षण

(i) भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा निर्धारित नवीनतम प्रावधान लागू होंगे। उत्तराखंड निवासी अनुसूचित जाति-जनजाति के आवेदकों को अर्हता के न्यूनतम अंको में पांच प्रतिशत की छूट दी जाएगी। किसी भी प्रकार के आरक्षण का लाभ उत्तराखंड के

आवेदकों को ही प्रदान किया जायेगा।

(ii) विश्वविद्यालय परिसर में छात्र-छात्राओं को पी.एच.डी./एम. फिल. में 20 प्रतिशत (परिसरीय) तथा 60 प्रतिशत परम्परागत धारा के छात्रों को आरक्षण प्रदान किया जायेगा।

2. विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) प्रवेश की प्रक्रिया

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) हेतु अभ्यर्थी का चयन निम्न प्रकार से होगा :

(i) विद्यावारिधि पी-एचडी प्रवेश परीक्षा (PET)

अथवा

(ii) सीधा प्रवेश (without appearing in PET)

प्रवेश के लिये निम्न प्रक्रिया होगी

(i) विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)/विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) प्रवेश परीक्षा (PET) : जो अभ्यर्थी न्यूनतम अर्हता पूर्ण करते है, वे प्रवेश परीक्षा देने के लिये पात्र हैं।

(ii) सीधा प्रवेश (without appearing in PET) : जो अभ्यर्थी निम्न बिन्दुओं में सें किसी एक को यदि पूर्ण करता है, तो वह अभ्यर्थी पी-एच.डी. में साक्षात्कार के लिये सीधे अर्ह होंगे :

- यू.जी.सी की जेआरएफ- नेट अथवा सेट (उत्तराखंड) परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी।
- संबंधित विषय में एम.फिल. उपाधिधारक अभ्यर्थी (जिन्होंने एम.फिल.प्रवेश परीक्षा के द्वारा तथा कोर्स वर्क के साथ किया है और जिनका एम.फिल., यू.जी.सी. रेगुलेशन 2016 के प्राविधानों के अनुरूप प्रदान किया गया हो)

3. प्रवेश परीक्षा (PET) का स्वरूप

विद्यावारिधि (पी-एच.डी.)/विशिष्टाचार्य (एम.फिल.) प्रवेश परीक्षा के लिए 200 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा, जो दो खण्डों में विभक्त होगा। प्रश्नपत्र का प्रथम खण्ड (क) 100 अंकों का होगा, जिसमें 50 वस्तुनिष्ठ प्रश्न भाषा दक्षता, शोध-प्रविधि एवं सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित होंगे। प्रत्येक प्रश्न दो अंक का होगा। प्रश्न पत्र के द्वितीय खण्ड (ख) में भी 50 प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंकों का होगा, जो शोधार्थी के स्नातकोत्तर विषय से सम्बन्धित होगा। सामान्य वर्ग के परीक्षार्थी को उत्तीर्णता के लिए 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। अनुसूचित जाति, जनजाति एवं विकलांग वर्ग के आवेदक 45 प्रतिशत अंकों पर साक्षात्कार के लिये अर्ह माने जायेंगे।

नोट :

- भाषा दक्षता के अन्तर्गत परम्परागत विषयों (साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, शिक्षाशास्त्र) के लिए संस्कृत और व्यावसायिक एवं आधुनिक विषयों (योग विज्ञान, हिन्दी एवं भाषा विज्ञान) में हिन्दी भाषा में सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।
- प्रश्न-पत्र की भाषा संस्कृत/हिन्दी होगी। (परम्परागत विषयों के लिए संस्कृत तथा अन्य के लिये हिन्दी)
- प्रथम खण्ड में 50 प्रतिशत अंक पाने वाले परीक्षार्थी द्वितीय खण्ड में भी 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर ही साक्षात्कार के लिए अर्ह घोषित किये जायेंगे। (अनुसूचित जाति, जनजाति एवं विकलांग वर्ग के लिए 45 प्रतिशत)।
- प्रश्नपत्र के द्वितीय खण्ड के लिये वहीं पाठ्यक्रम निर्धारित होगा, जो सम्बन्धित स्नातकोत्तर विषयों में उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित है। (पाठ्यक्रम पृष्ठभाग में संलग्न है)
- सीधे प्रवेश हेतु अर्ह अभ्यर्थी को प्रवेश परीक्षा में छूट प्रदान की जायेगी, लेकिन इनके लिए भी आवेदन पत्र भरकर साक्षात्कार में शामिल होना अनिवार्य होगा।
- सेवारत अभ्यर्थियों को शोध उपाधि को पूर्ण करने के लिये यह सुनिश्चित करना होगा कि उन्होंने अपने नियोक्ता से अनुमति (एन.ओ.सी.) प्राप्त कर ली है।
- नेट जेआरएफ/नेट/सेट उत्तीर्ण आवेदकों को भी परीक्षा से पूर्व ही आवेदन पत्र प्रस्तुत करना होगा।

4. प्रवेश पत्र

अभ्यर्थी को लिखित परीक्षा के लिये प्रवेश पत्र डाक द्वारा पत्र व्यवहार के पते पर रजिस्टर्ड /स्पीड पोस्ट से भेजा जायेगा। डाक के विलम्बित होने पर विश्वविद्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। प्रवेश परीक्षा के दिन प्रवेश पत्र की द्वितीय प्रति विश्वविद्यालय परिसर से दो घंटे पूर्व भी प्राप्त की जा सकती है।

5. साक्षात्कार हेतु प्रपत्रों की सूची

साक्षात्कार / परिचर्चा के समय निम्न प्रपत्रों की सत्यापित छायाप्रति सहित सम्बन्धित विभाग में उपस्थित होना होगा :

- हाईस्कूल अथवा समकक्ष परीक्षा का अंक पत्र एवं प्रमाण-पत्र
- इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा का अंक पत्र एवं प्रमाण-पत्र

- स्नातक अथवा समकक्ष परीक्षा के सभी वर्षों के अंक पत्र एवं प्रमाण-पत्र
- स्नातकोत्तर अथवा समकक्ष परीक्षा के सभी वर्षों के अंक पत्र एवं प्रमाण-पत्र
- एम.फिल. परीक्षा का अंक पत्र एवं प्रमाण-पत्र
- यू.जी.सी./सी.एस.आई.आर. (नट-जे.आर.एफ./नेट/सेट (उत्तराखण्ड) के प्रमाण पत्रों की सत्यापित प्रतिलिपि (शोध प्रवेश परीक्षा से छूट पाने वाले सीधे प्रवेश के अन्तर्गत आने वाले अभ्यर्थियों के लिये)
- आरक्षण वर्ग का प्रमाण-पत्र
- सक्षम अधिकारी द्वारा प्रदत्त जाति प्रमाण-पत्र
- विकलांग अभ्यर्थियो के लिए जिले के मुख्य चिकित्साधिकारी द्वारा प्रदत्त विकलांगता प्रमाण-पत्र
- प्रवेश परीक्षा का प्रवेश पत्र (मूल प्रति)
- चरित्र प्रमाण पत्र (मूल प्रति)
- प्रवजन प्रमाण (पंजीकरण के समय आवश्यक होगा)

नोट : जाँच हेतु उपरोक्त सभी प्रपत्र (मूल प्रतियाँ)

6. एकसत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स-वर्क)

साक्षात्कार के उपरान्त विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) कार्यक्रम के लिये सफल घोषित अभ्यर्थियों को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विनियम-2016 द्वारा निर्धारित छः माह का एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क) करना होगा। इसके अन्तर्गत निम्न विषयों का अध्ययन होगा :

- शोध-सर्वेक्षण एवं ग्रन्थ-समीक्षा
- संगणक (कम्प्यूटर) परिचय
- शोध प्रविधि (Research Methodology)
- निर्धारित कार्य एवं प्रस्तुति (Project and Presentation) (स्नातकोत्तर के विशेषज्ञता विषय पर आधारित)

नोट :

- अभ्यर्थियो को विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित किये जा रहे एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (प्री-पी-एच.डी. कोर्स वर्क) को अनिवार्य रूप से उत्तीर्ण करना होगा, इसके उपरान्त ही शोध कार्य आरंभ करने की अनुमति प्रदान की जाएगी।
- एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने के लिए दो अवसर प्रदान किये जाएंगे।
- सत्रीय पाठ्यक्रम का अध्ययन पूर्ण होने पर प्रतिवर्ष परीक्षा आयोजित की जायेगी।
- एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने की प्रमाण-पत्र अलग से प्रदान किया जाएगा।
- सम्बन्धित विषय में एम.फिल. अथवा सम्बद्ध विषय में पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त आवेदकों को एकसत्रीय पाठ्यक्रम से छूट देने पर विश्वविद्यालय शोध-समिति विचार कर सकेगी। (According to Clause 7.8)
- कोर्स-वर्क की कक्षाएं सामान्यतः विश्वविद्यालय स्तर पर एकीकृत रूप से संचालित की जाएंगी। आवश्यकतानुसार सुसंगत विषयों के समूह बनाकर भी कक्षाएं संचालित की जा सकेंगी।
- कोर्स-वर्क 100 अंकों का होगा, जिसमें 80 अंकों की लिखित परीक्षा होगी, तथा 20 अंक आंतरिक मूल्यांकन (internal assessment) निर्देशक द्वारा उपस्थिति, व्यवहार, शोध पत्र लेखन आदि के आधार पर अभ्यर्थी को दिया जायेगा। कोर्स वर्क के लिये न्यूनतम उत्तीर्ण अंक 40 प्रतिशत होगा।

7. शोध समिति

शोध प्रस्ताव का परिवीक्षण विश्वविद्यालय शोध समिति (R.D.C.) द्वारा होगा, जिसका गठन निम्न रूपेण किया जायेगा :

(i)	कुलपति	अध्यक्ष
(ii)	संकायाध्यक्ष (सम्बद्ध)	सदस्य
(iii)	विद्यापरिषद् का एक प्रतिनिधि	सदस्य
(iv)	सम्बन्धित विभाग का वरिष्ठ आचार्य	सदस्य
(v)	सम्बन्धित विभाग का वरिष्ठ सह आचार्य	सदस्य
(vi)	सम्बन्धित विभाग का वरिष्ठ सहायक आचार्य	सदस्य
(vii)	अध्यक्ष, शोध विभाग/शोध अधिकारी	सदस्य
(viii)	कुलपति द्वारा मनोनीत दो विषय विशेषज्ञ विद्वान् (इनमें से एक विद्वान प्रदेश से बाहर का होगा)	सदस्य
(ix)	सम्बन्धित विभाग का अध्यक्ष/प्रभारी	सदस्य-सचिव

8. विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) निर्देशन के निर्देशक/सह-निर्देशक की योग्यता

कुलपति द्वारा अधिकृत विद्वान एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानदण्डों के अनुरूप विश्वविद्यालय के नियमित अध्यापक और नियमित शोध अधिकारी अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में शोध निर्देशन कर सकेंगे। शोध निर्देशन करने वालों की अर्हता निम्न प्रकार होगी :

(i) सम्बन्धित विषय में शोध उपाधि/विद्यावारिधि प्राप्त हो तथा

आचार्य के सम्बन्ध में पांच तथा सह/सहायक आचार्यों के न्यूनतम् दो शोधपत्र मूल्यांकित पत्रिका में प्रकाशित हो।

(ii) व्यावसायिक एवं आधुनिक विषयों में ऐसे बाह्य विशेषज्ञों को भी सह निर्देशक बनाया जा सकेगा जिन्होंने शोध उपाधि प्राप्त की हो और सम्बन्धित क्षेत्र में उन्हें न्यूनतम दस वर्ष का अध्यापन का अनुभव हो।

(iii) कोई भी शिक्षक अपने निकट सम्बन्धी (माँ-बाप, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, भाई-बहन एवं उनके पाल्य) का शोध निर्देशक नहीं बन सकेगा।

(iv) जिस निर्देशक के निर्देशन में शोध-छात्र का पंजीकरण होगा, वह शोध निर्देशक अन्य संस्था में नियुक्ति अथवा स्थानान्तरण के बाद भी शोध निर्देशक का कार्य सम्पन्न कर सकेगा।

(v) पी-एच.डी. हेतु पंजीकरण के पश्चात् अधिकतम् एक वर्ष के अन्तर्गत ही कुलपति की स्वीकृति से शोध निर्देशक बदला जा सकेगा।

(vi) शोध निर्देशक के निर्देशक में शोधकर्ताओं की संख्या (यू.जी.सी. के नए मानक के अनुरूप) निम्न होगी:

मार्गदर्शक श्रेणी	शोध संख्या (अधिकतम)	
	पी-एच.डी.	एम.फिल.
आचार्य	08	03
सह-आचार्य	06	02
सहायक आचार्य/शोध अधिकारी	04	01

(vii) शोध समिति की अनुशंसा पर तथा अनुसंधान निर्देशकों के अभाव में कुलपति उपर्युक्त संख्या में परिवर्तन कर सकते हैं। अन्त:शास्त्रीय विषयों में आवश्यकता होने पर बाvह्य सह-निर्देशक की नियुक्ति शोध निर्देशक की संस्तुति पर कुलपति द्वारा की जाएगी।

(viii) अभ्यर्थी द्वारा पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध जमा करने के पश्चात निर्देशक/शिक्षक की आवंटित सीट रिक्त मानी जायेगी।

9. प्रगति पत्र का प्रस्तुतीकरण

शोधार्थी को अनिवार्य रूप से तीन माह में अपना प्रगति पत्र निर्देशक की संस्तुति/हस्ताक्षर के साथ जमा करना अनिवार्य होगा।

10. शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरण

अनुसंधान के लिये शोध प्रबन्ध को जमा करने का न्यूनतम समय 3 वर्ष तथा अधिकतम समय 6 वर्ष होगा। यह समय पंजीकरण की दिनांक से माना जायेगा। यह पंजीकरण 6 वर्ष के उपरांत स्वत: ही निरस्त माना जायेगा। यदि लगातार तीन प्रगति पत्र शोधार्थी द्वारा जमा नहीं किये जाते तो पंजीकरण स्वत: ही निरस्त हो जायेगा। विशेष परिस्थिति में कुलपति की अनुमति से 6 माह पूर्व शोध प्रबन्ध जमा कराया जा सकेगा।

एम.फिल. पाठ्यक्रम की न्यूनतम अवधि लगातार 02 सेमेस्टर/1 वर्ष और लगातार अधिकतम चार (04) सेमेस्टर/दो वर्ष होगी।

11. शोध प्रबन्ध का आन्तरिक स्वरूप

(i) मुख्य/प्रथम पृष्ठ
(ii) शोध निर्देशक का प्रमाण पत्र
(iii) शोधार्थी का घोषणा पत्र
(iv) विभागाध्यक्ष का प्रमाण पत्र
(v) अनुक्रमणिका
(vi) (क) भूमिका/प्रस्तावना (ख) आभार
(vii) अध्याय (क्रमानुसार)
(viii) संदर्भ ग्रन्थ सूची
(ix) परिशिष्ट

12. शोधप्रबन्ध का परीक्षण

(i) कोर्स वर्क और शोध पद्धति (रिसर्च मैथोडोलॉजी) के पूर्ण होने पर शोधार्थी को अपने शोध प्रबन्ध की प्रति कम से कम तीन वर्ष और अधिकतम छ: वर्ष के मध्य जमा करानी होगी।

(ii) शोधार्थी को अपने शोध प्रबन्ध को जमा करने से पहले न्यूनतम एक शोध पत्र मूल्यांकित पत्रिका (रैफर्ड जर्नल) में प्रकाशित कराना अनिवार्य है तथा इसका प्रमाण भी शोध प्रबन्ध जमा करने के समय प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

(iii) शोध प्रबन्ध जमा करने से पहले शोधार्थी को एक पूर्व प्रस्तुति (प्री-प्रेजेन्टेशन) भी देना होगा, जो सम्बन्धित विभाग तथा उसके शोध निर्देशक की उपस्थिति में प्रतिपुष्टि (फीडबैक) तथा टिप्पणी के लिये खुली रखी जायेगा।

(iv) शोध प्रबन्ध पूर्ण होने के बाद शोधार्थी को शोध प्रबन्ध की पाँच टंकित प्रतियां परीक्षा विभाग में जमा करनी होंगी।

(v) शोध प्रबन्ध की टंकित प्रतियों को मुख्य/प्रथम पृष्ठ के साथ बाइडिंग कराकर व शोध प्रबन्ध को सॉफ्टकॉपी को 02 सी.डी. के साथ जमा कराना अनिवार्य है।

(vi) शोध प्रबन्ध की भाषा प्राच्य विषयों संस्कृत: साहित्य, ज्योतिष व व्याकरण के लिये संस्कृत तथा अन्य विषयों के लिये वैकल्पिक रूप में (हिन्दी अथवा अंग्रेजी) होगी।

(vii) शोध प्रबन्ध एक ऐसा गुण-दोष विवेचित विशिष्ट कार्य होना चाहिए, जिसमें या तो नवीन तथ्यों का अनुसंधान हो अथवा सैद्धान्तिक तथ्यों की नवीन व्याख्या की गयी हो। उपर्युक्त दोनों बातों में आलोचनात्मक परीक्षण और दृढ़ निर्णय अनुसंधान की क्षमता का स्पष्ट सूचक माने जायेंगे।

(viii) भाषा और विषय प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से भी शोध प्रबन्ध संतोषजनक होना चाहिए। भाषा तथा शैली साहित्यिक होनी चाहिए।

(ix) शोधार्थी को अपने शोध प्रबन्ध का सारांश जो 10-15 पृष्ठ का होना चाहिये, भी जमा करना अनिवार्य है।

13. विभागों के कोड तथा उपलब्ध सीटों की संख्या

विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों/संकायों में उपलब्ध निम्नलिखित विषय में विद्यावारिधि (पी-एच.डी.) उपाधि प्रदान की जाएगी :

विभाग कोड संख्या	मुख्य विषय	सम्बद्ध विषय	सीटों की संख्या*
यूएसयू-11	व्याकरण	नव्य व्याकरण, प्राच्य व्याकरण	04
यूएसयू-12	साहित्य	-	11
यूएसयू-13	ज्योतिष	सिद्धान्त ज्योतिष, फलित ज्योतिष	02
यूएसयू-14	योग	-	08
यूएसयू-15	हिन्दी एवं भाषाविज्ञान	हिन्दी, भाषाविज्ञान	04
यूएसयू-16	शिक्षा विभाग	-	16

*सीटों की संख्या में परिवर्तन संभव है।

पी-एच.डी. प्रवेश परीक्षा के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम

नव्यव्याकरणम् (कोड संख्या - यूएसयू-11)

यूनिट -1

(i) व्याकरणशास्त्रास्येतिहास:

(ii) वैयाकरणसिद्धान्त कौमुद्य: प्रथमभागादारभ्य द्वितीयभागस्य समासप्रकरणं यावत्

यूनिट -2

(i) वैयाकरणसिद्धान्त कौमुदी अवशिष्टभाग: (सम्पूर्णम्)

यूनिट -3

(i) लघुशब्देन्दुशेखर: - संज्ञानप्रकरणत: परिभाषाप्रकरणपर्यन्तम्

(ii) वाक्यपदीयस्य ब्रह्मकाण्ड:

(iii) वैयाकरणभूषणसारस्य -(धत्वर्थप्रकरणत: सुबर्थ प्रकरणान्तम्)

(iv) लघुशब्देन्दुशेखर: - अच्सन्धित: स्वादिसन्धिपर्यन्तम्

(v) न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्या: शब्दखण्डम्

(vi) वैयाकरणभूषणसारे - नामार्थत: ग्रन्थपर्यन्तम्

(vii) लघुशब्देन्दुशेखरे - अजन्तपुल्लिङ्गप्रकरणम्

(viii) लघुशब्देन्दुशेखरे - अजन्तस्त्रीलिङ्गत: अव्ययप्रकरणान्तम्

(ix) लघुशब्देन्दुशेखर:-(स्त्रीप्रत्ययत: कारकप्रकरणे द्वितीया विभक्त्यर्थ प्रकरणान्तम्)

(x) कारकप्रकरणे तृतीयाविभक्ति: अव्ययीभाव समासं यावत्

यूनिट -4

(i) निरुक्तम् - (प्रथम, द्वितीयाध्यायौ)

(ii) वैदिकवाङ्मयस्येतिहास:

(iii) घुमश्जूषा-शक्तिफलक्षणाऽऽकाङ्क्षायोग्यतातात्पर्यासत्ति-प्रकरणान्तम्

(iv) निरुक्तम् (तृतीयचतुर्थाध्यायौ)

(v) व्युत्पत्तिवाद: प्रथमाकारकप्रकरणम्-(नीलो घट..... न च .... इति दिक्)

यूनिट -5

भाषाविज्ञानम्

(i) भाषास्वरूपम्

(ii) भाषाया: उत्पत्ति: विकासश्च,

(iii) भाषापरिवार:

(iv) ध्वनिविज्ञानम्

(v) पदविज्ञानम् अर्थविज्ञानम्

भारतीयसंस्कृति:, भारतीयसंस्कृति: तत्स्वरूपं वैशिष्टयश्च

(i) पुरूषार्थचतुष्टयम्

(ii) वर्णाश्रमव्यवस्था

(iii) षोडशसंस्कारा:

(iv) पंचमहायज्ञा:

(v) आधुनिक परिप्रेक्ष्ये उपरोक्तानाम् उपादेयता।

प्राचीनव्याकरणम् (कोड संख्या-यूएसयू-11)

यूनिट-1

(i) व्याकरणशास्त्रस्येतिहास:

(ii) काशिकावृत्ति: (सम्पूर्णम्)

यूनिट-2

(i) महाभाष्यस्य प्रथममाध्यायस्य द्वितीयतृतीयपादौ

(ii) महाभाष्यस्य प्रथमाध्यायस्य चतुर्थपाद:

(iii) महाभाष्यस्य द्वितीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ

(iv) महाभाष्यस्य द्वितीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

यूनिट-3

(i) महाभाष्यस्य तृतीयाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ

(ii) महाभाष्यस्य तृतीयाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

(iii) महाभाष्यस्य चतुर्थाध्यायस्य प्रथमद्वितीयपादौ

(iv) महाभाष्यस्य चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

यूनिट-4

(i) महाभाष्यस्य पंचमाध्याय

(ii) महाभाष्यस्य षष्ठध्याय:

(iii) महाभाष्यस्य सप्तमाध्याय

(iv) महाभाष्यस्याष्टमाध्याय:

(v) महाभाष्यस्य चतुर्थाध्यायस्य तृतीयचतुर्थपादौ

यूनिट-5

(i) वैयाकरणभूषणसारस्य धत्वर्थप्रकरणम्।

(ii) परिभाषेन्दुशेखर: (आदित: असिद्धं बहिरमन्त्र गे परिभाषां यावत्)

(iii) निरुक्तस्य प्रथमद्वितीयाध्यायौ

(iv) वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्

साहित्यम् (कोड संख्या -यूएसयू-12)

यूनिट-1

(i) काव्यप्रकाश: (सम्पूर्णम्)

यूनिट-2

(i) ध्वन्यालोकः (सम्पूर्णम्)

यूनिट-3

(i) दशरुपकम् (सम्पूर्णम्)

यूनिट-4

(i) काव्यशास्त्रीय षट् सम्पद्रायाः
(रस-अलंकार-ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति-रीतयः)

यूनिट-5

(i) काव्यमीमांसा (प्रारम्भिकाः पंचाध्यायाः)

यूनिट-6

(i) नाटकानि-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्रारक्षसम्, उत्तररामचरितम्

यूनिट-7

(i) महाकाव्यानि-रघुवंशमहाकाव्यम्, नैषधीय चरितम्, शिशुपालवधम्।

यूनिट-8

(i) षड्दर्शनानां सामान्य परिचयः।

यूनिट-9

(i) वैदिकसाहित्यस्य सामान्य परिचयः।

यूनिट-10

(i) नाट्यशास्त्रम् (1,2,6 अध्यायाः)

ज्यौतिषम् (कोड संख्या-यूएसयू-यूनिट-7)

यूनिट-1

पंचांग विचार (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण), ग्रह स्पष्टकरण, दशासाधन (विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी), पंचक विचार, विक्रमी सम्वत्, शक सम्वत्, अयन, गोल, ऋतु, मास, पक्ष, भयात, इष्टकाल, चालन, देशान्तर, रेखांश, अक्षांश, दिनमान, रात्रिमान, अहोरात्रमान्, षोडश वर्ग साधन (लग्न-हीरा-द्रेष्काण-नवांश-द्वादशांश आदि)।

यूनिट-2

गोल, भूगोल, कक्षा गोल, वृत्त, व्यास रेखा, लंका रेखा देश, भूपरिधि, मध्य रेखा, नाड़ी वृत्त, क्रान्ति वृत्त, कदम्ब स्थान, सावनमान, सौरमान, चान्द्रमान, नाक्षत्रमान, मूर्त्तकाल, अमूर्त्तकाल, अहोरात्र व्यवस्था, महायुगमान, मन्वन्तर, कल्पमान, ब्रह्मा दिनमान, विनाड़ी, नाड़ी, अहोरात्र, संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावस्या, तिथिक्षय, तिथिवृद्धि, अधिकमास, क्षयमास, भगण, विकला, कला, अंश, राशि।

यूनिट-3

सिद्धान्त संहिता हीरा लक्षण, दैवज्ञ लक्षण, ग्रहयुद्ध (भेद, उल्लेख, अंशुमर्दन, अपसव्य) मेघ गर्भ लक्षण, मेघ गर्भधारण, मेघ गर्भ प्रसव काल, भूकम्प लक्षण, उल्का पात विचार, सद्योवृष्टि, जल प्रकरण, सन्ध्या लक्षण, मेघों के प्रकार।

यूनिट-4

हीरा, काल पुरुष के अवयव, राशि स्वरूप, राशि स्वामी, मेषादि राशियों के पर्यायवाची, पृष्ठोदय-शीर्षोदय-उभयोदय, राशियां, क्रूर-सौम्य, पुरुष-स्त्री, चर-स्थिर-द्विस्वभाव राशियां, ग्रहेच्चनीच, वर्गोत्तम राशियां, द्वादशभाव पर्यायवाची, केन्द्र-त्रिकोण, पणकर, आपोक्लिम भाव संज्ञा, राशियों के वर्ण दिशा।

यूनिट-5

सूर्यादि ग्रहों की आत्मादि संज्ञा, ग्रहों के पर्यायवाची, ग्रहवर्ण, ग्रहों की मूल त्रिकोण राशियां, पूर्वादि दिशाओं के स्वामी, मेषादि राशियों की दिशाएं, पुरुष-स्त्री-नपुंसक ग्रह एवं ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र वर्णादि विचार, ग्रहस्वरूप, धातुओं के स्वामी ग्रह, ग्रह-दृष्टि, रसों के स्वामी ग्रह, नैसर्गिक-तात्कालिक-पंचधा ग्रह मैत्री, ग्रहों के षड्बल, ग्रहों की दीप्तादि-बालादि-जागृतादि अवस्थाएं।

यूनिट-6

गर्भसंभव, असंभव ज्ञान, मैथुन विचार, आयुविचार (दीर्घायु-मध्यमायु, अल्पायु अमिलायु, दिव्य-आयु, पूर्णायु) अरिष्ट विचार (बालारिष्ट-योगारिष्ट) अरिष्ट भंग योगादि।

यूनिट-7

नपुंसक योग, पंच महापुरुष योग (रुचक-भद्र-हंस-मालव्य-शाष योग) गजकेसरी योग, राजयोग, महाराजयोग, लक्ष्मीयोग, आश्रय योग, आकृति योग, संख्या योग, वेशि-वाशि-उपभयचारी योग, सुनफा-अनफा-दुरुधरा-केमदुम योग, धनाढ्य योग।

यूनिट-8

वामन योग, कुवज योग, सदन्त योग, जन्मान्ध योग, जारज योग, कुष्ठयोग, व्रणयोग, रोगयोग, नेत्रयोग, कर्णरोग, मधुमेह रोग, हृदयरोग, विषकन्या योग, विषकन्या भङयोग, राजभगयोग, नीच भगराजयोगादि।

यूनिट-9

वर्षप्रवेशसाधन, तिथिसाधन, मुन्था विचार, वर्षेनिर्णय, ग्रहदृष्टि, ग्रहमैत्री, दीप्तांश, इक्वालादि षाडश योग, गोचर विचार, शनि साढ़ेसाती, ढैय्या, नन्दादि तिथियां, सिद्धयोग, अमृतयोग, ध्रुवगण, चरगण, मित्रगण, लघुगण, मृदुगण, त्रिपुष्करयोग, भद्रा, चन्द्रवास, गर्भाधानविचार, नामकरणमुहूर्त, अन्नप्राशनमुहूर्त, मुण्डनमुहूर्त, यज्ञोपवतीत मुहूर्त, विवाहनक्षत्र, विवाहमास, अष्टकूट, मांगलिक विचारादि।

यूनिट-10

परगृहनिवासफल, गृहारम्भविधि, काकिणी विचार, भूमिलक्षण, भूमिदोष, वासयोग्य भूमि, जागृतादि भूमि, राहुमुखपुच्छविचार, खातविधि, शिलान्यासविधि, निषिद्धकाष्ठ, दिशानुसार गृहविभाग, ताराफल, त्याज्यमास, ग्राह्यमास, गृहारम्भ समय, शुभयोग, वास्तुचक्र, वृषवास्तुचक्र, कूर्मचक्र, द्वारनिर्णयविचार, विविध गृहप्रवेश, जीर्ण गृह प्रवेश विचार, वृक्षविचारादि।

योगाचार्य (कोड संख्या-यूएसयू-14)

यूनिट-1

(अ) योग के आधारभूत तत्व

(i) योग का अर्थ, योग की परिभाषा, योग का इतिहास, योग का उद्गम एवं विकास, आधुनिक युग में योग की उपयोगिता।

(ii) विभिन्न ग्रन्थों में योग का स्वरूप-वेद, उपनिषद्, गीता, बौद्ध, जैन, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, मीमांसा, वेदान्त।

(iii) योग पद्धतियाँ : राजयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग, कर्मयोग, हठयोग, अष्टांग योग, क्रिया योग, समग्रयोग।

(iv) विभिन्न योगियों का जीवन परिचय एवं योग के क्षेत्र में योगदान महर्षि पतंजलि, श्री अरविन्द, स्वामी कुवलयानन्द, स्वामी शिवानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानंद, योगी श्याम-चरणलाहिडी, गुरू गोरक्षनाथ।

(v) योग के ग्रन्थों का सामान्य परिचय-योग, सूत्र, हठ योग प्रदीपिका, घेरण्डसंहिता, श्रीमद्भगवद्गीता।

(ब) भारतीय दर्शन एवं मानव चेतना

(i) दर्शन-अर्थ, परिभाषायें तथा भारतीय दर्शन का परिचय, आधुनिक जीवन में दर्शन की उपयोगिता। चार्वाक-दर्शन का सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त। बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त। जैन दर्शन का सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त। न्याय दर्शन का सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त। वैशेषिक दर्शन का सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त। सांख्य दर्शन-सामान्य, परिचय एवं सिद्धान्त। योगदर्शन-सामान्य परिचय एवं सिद्धान्त तथा आधुनिक जीवन में उपयोगिता।

(ii) मीमांसा दर्शन-सामान्य परिचय तथा सिद्धान्त। ईश्वर, आत्मा, बन्धन, मोक्ष तथा कर्म का सिद्धान्त।

(iii) मानव चेतना-चेतना का अर्थ, परिभाषा, मानव चेतना का स्वरूप, मानव चेतना के अध्ययन की आवश्यकता तथा वेद, उपरिषद, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन एवं षट् दर्शनों में मानव चेतना का स्वरूप।

(iv) मानव चेतना के रहस्य-कर्म सिद्धान्त, संस्कार और पुनर्जन्म, भाग्य और पुरुषार्थ। विभिन्न धर्मों में मानव चेतना के विकास की विधियां-इस्लाम, ईसाई, सिक्ख तथा हिन्दू धर्म।

यूनिट-2

(अ) यौगिक ग्रन्थ - (श्रीमद्भगवद् गीता)

(i) गीता का परिचय, उद्देश्य, गीता का महत्व, आधुनिक जीवन में गीता की उपादेयता, अर्जुन की अवस्था।

(ii) गीता के अनुसार - आत्मा का स्वरूप, योग के विभिन्न लक्षण, स्थित प्रज्ञता (अध्याय 2), कर्म सिद्धान्त, सृष्टि चक्र की परम्परा, लोक संग्रह (अध्याय 3)

(iii) धर्म का स्वरूप (3), कर्मयोग की परम्परा, यज्ञ का स्वरूप, ज्ञान की अग्नि (4) गीता के अनुसार सांख्य योग तथा कर्म योग की एकता (अध्याय 3)

(iv) गीता के अनुसार सन्यास का स्वरूप, मोक्ष में सन्यास की उपादेयता (5) कर्म योगी के लक्षण, ब्रह्म ज्ञान का उपाय, अभ्यास और वैराग्य, ध्यान। माया का स्वरूप (अध्याय 7)

(v) ईश्वर की विभूतियां (अध्याय 10), गीता के अनुसार ईश्वर का विराट स्वरूप, निष्काम कर्मयोग, भक्ति योग, ज्ञान योग (अध्याय 12) क्षेत्र एवं क्षेत्रज्ञ (अध्याय 13), प्रवृत्ति एवं निवृत्ति (अध्याय 14), त्रिविध श्रद्धा (अध्याय 17)

(ब) सांख्यकारिका

(i) सांख्यकारिका का परिचय, काल, सांख्यदर्शनकार ईश्वर कृष्ण का जीवन परिचय, सांख्यकारिका का उद्देश्य, आधुनिक जीवन में सांख्यकारिका की उपादेयता।

(ii) सांख्यकारिका के अनुसार दु:ख का त्रैविध्य, दु:खापघात के विभिन्न उपाय, प्रमाण का स्वरूप और भेद-प्रत्यक्ष, अनुमान,

शब्द की व्याख्या।

सांख्य के अनुसार पच्चीस तत्वों की उत्पत्ति, सत्कार्य वाद अनुपलब्धि के कारण, व्यक्त-अव्यक्त विवेचन।

(iii) सांख्यकारिका के अनुसार गुणों का स्वरूप, पुरुष सिद्धि, पुरुष बहुत्व, बुद्धि के आठ धर्म, अष्ट सिद्धि।

(iv) प्रकृति की अपवर्ग प्रवृत्ति, त्रयोदश करण, सूक्ष्मशरीर, मोक्ष, विदेह मुक्ति, जीवन मुक्ति।

यूनिट-3

हठयोग के सिद्धान्त

(i) हठयोग की परिभाषा अभ्यास हेतु उचित स्थान, ऋतु काल। साधना में साधक के बाधक तत्व, सिद्धि के लक्षण तथा योगी के लिए आहार। हठप्रदीपिका में वर्णित आसनों की विधि व लाभ।

(ii) हठप्रदीपिका के अनुसार प्राणायाम की परिभाषा, प्रकार, विधि व लाभ। प्राणायाम की उपयोगिता। षट्कर्म वर्णन-धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक व कपालभाति की विधि व लाभ।

(iii) हठप्रदीपिकानुसार बन्ध-मुद्रा वर्णम्-महामुद्रा, महाबंध, महावेध, खेचरी, उड्डीयान बन्ध, जालन्धर- बन्ध, मूलबन्ध, विपरीतकरणी, बज्रोली, शक्तिचालिनी। समाधि का वर्णन। नादानुसन्धन, कुण्डलिनी का स्वरूप तथा जागरण के उपाय।

(iv) घेरण्ड संहितानुसार सप्त साधन, घेरण्ड संहित में वर्णित षट्कर्म-धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक, कपालभाति की विधि, सावधानियाँ व लाभ, घेरण्ड संहित में निषिद्ध आहार, मिताहार।

(v) घेरण्ड संहिता में वर्णित आसन, प्राणायाम, मुद्राएं, प्राणाहार, ध्यान व समाधि का विवेचन।

यूनिट-4

मानव शरीर रचना/क्रियाविज्ञान

(i) कोशिका, ऊतक की रचना व क्रिया। अस्थि तथा पेशी तन्त्र की रचना तथा क्रिया और उन पर योग का प्रभाव। लिंगामेन्ट, टेन्डन, जोड़ के प्रकार, रचना व कार्य, मेरूदण्ड, रचना एवं कार्य।

(ii) रक्त का संगठन : लाल रक्त कणिकाएं, श्वेत रक्त कणिकाएं, प्लेट्लेट्स, प्लाजमा, हीमोग्लोबिन-रक्त का थक्का, ब्लड ग्रुप और उसकी उपयोगिता। रोग प्रतिरोधात्मक तंत्र।

(iii) रक्त परिसंचरण तंत्र : हृदय की रचना व क्रिया व कार्य तथा उन पर योग का प्रभाव। श्वसन तंत्र : रचना, क्रिया कार्य तथा योग का प्रभाव।

(iv) उत्सर्जन तंत्र : रचना, क्रिया, कार्य तथा योग का प्रभाव।

(v) पाचन तंत्र : रचना, क्रिया, कार्य तथा योग का प्रभाव।

(vi) अंत: स्रावी ग्रन्थियाँ : रचना, क्रिया, कार्य तथा योग का प्रभाव।

(vii) ज्ञानेन्द्रियाँ: रचना, क्रिया, कार्य तथा योग का प्रभाव।

(viii) प्रजनन तंत्र तथा तंत्रिका तंत्र की रचना, क्रिया, कार्य तथा योग का प्रभाव।

यूनिट-5

पातंजल योग सूत्र

(i) योग की परिभाषा, चित्त की भूमियाँ, चित्त की वृत्तियाँ, अभ्यास और वैराग्य, समाधि के भेद, ईश्वर का स्वरूप, ईश्वर प्रणिधान, योगान्तराय, चित्तप्रसादन के उपाय, ऋतम्भरा प्रज्ञा।

(ii) क्रिया योग, पंचक्लेश, कर्माशय, दु:ख का स्वरूप, चतुर्थावाद, विवेक ख्याति। सप्तधा प्रज्ञा।

(iii) योग के आठ अंग, यम-नियम की व्याख्या, महाव्रत का स्वरूप, वितर्क विवेचन, यमसिद्धि का फल, नियम सिद्धि का फल, आसन व आसन सिद्धि, प्राणायाम तथा प्राणायाम का फल, प्रत्याहार तथा प्रत्याहार का फल।

(iv) धारण, ध्यान और समाधि, संयम, चित्त का परिणाम, विभूति और उसके भेद, धर्म मेघ कैवल्य का स्वरूप।

(v) सिद्धि के पाँच भेद, निर्माण चित्त, कर्म के भेद, द्रष्टा और दृश्य, समाधि का स्वरूप, स्वरूप प्रतिष्ठान।

यूनिट-6

(अ) स्कन्धवृत्त, आहार एवं पोषण

(i) स्वास्थ्य की परिभाषा, स्वस्थ पुरुष के लक्षण, स्वस्थ वृत्त का प्रयोजन, दिनचर्या मुखशोधन, व्यायाम-व्यायाम की परिभाषा, प्रकार, योग्यायोग्य, स्नान, अभ्यंग की उपयोगिता व प्रकार, स्नान के लाभ, ऋतु एवं दोष के अनुसार स्नान, संध्योपासना, योगाभ्यास, रात्रिचर्या, निंद्रा, ब्रह्मचर्य।

(ii) ऋतुचर्या-ऋतु विभाजन, ऋतु के अनुसार दोषों का संचय, प्रकोप एवं प्रशमन। सद्वृत्त एवं अचार रसायन।

(iii) आहार की परिभाषा, आहार के गुण व कर्म : आहार मात्रा, काल, संतुलित आहार, दुग्धाहार, फलाहार, अपक्वाहार, मिताहार, उपवास, शाकाहार के गुण, मांसाहार के अवगुण।

(iv) भोज्य तत्वों का रासायनिक वर्गीकरण, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज, लवण, विटामिन, जल का संगठन, वर्गीकरण तथा शरीर में कार्य। आहार योजना, यौगिक आहार।

(v) पोषण – पोषण की अवधारणा, कुपोषण का प्रभाव। कुपोषण से होने वाले रोग और उपवास में अंतर, कुपोषण का निवारण, पोषक आहार और उसकी उपयोगिता।

(ब) योग चिकित्सा

(i) योग चिकित्सा – अर्थ, क्षेत्र, सीमाएं, उद्देश्य एवं सिद्धान्त। योग चिकित्सा के साधन – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, षटकर्म, मुद्रा, बंध, ध्यान।

(ii) पंच महाभूत, पंचकोश, पंच प्राण, षट्चक्र की आवधारणा। भिन्न-भिन्न रोगों में योग चिकित्सा देने के नियम एवं सावधानियां, यौगिक कक्षाओं का वर्गीकरण, योग चिकित्सक के लिए आवश्यक नियम, रोगी-चिकित्सक का सम्बन्ध।

(iii) सामान्य रोगों का लक्षण, कारण सहित यौगिक प्रबन्धन।

(iv) श्वास रोग – साइनोसाइटिस, श्वास एवं दमा प्रतिशयाय।

(v) पाचन तंत्र सम्बन्धी – कब्ज, अजीर्ण, अल्सर, उदर-वायु, पीलिया, कोलाइटिस (वृहदांत्र शोध)

(vi) रक्त परिवहन तंत्र – उच्च रक्त चाप, निम्न रक्त चाप, हृदय धमनी अवरोध।

(vii) प्रजनन सम्बन्धी रोग-नपुंसकता एवं अप्रजायिता

(viii) उत्सर्जन तंत्र – पथरी

(ix) अन्तस्रावी ग्रन्थियाँ सम्बन्धी – सरवाइकल स्पोडोलाइटिस, लम्बर स्पीडोलाइटिस, अर्थराइटिस, गठिया।

(x) स्त्री रोग – मासिक धर्म नियमित न होना, ल्यूकोरिया कटिशूल।

(xi) तंत्रिका तंत्र – माइग्रेन एवं सिर दर्द, दौरे पड़ना।

(xii) मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा, मानसिक रोगों के कारण व लक्षण, मानसिक रोग के प्रकार-चिन्ता, अवसाद, दुर्बलता, अनिद्रा रोग का यौगिक प्रबन्धन। व्यक्तित्व विकास का यौगिक प्रबन्धन।

यूनिट -7

योग एवं शारीरिक शिक्षा

(i) शारीरिक शिक्षा का अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य । शारीरिक शिक्षा का इतिहास। आसन तथा व्यायाम में विभिन्नता एवं समानता। शारीरिक शिक्षा में योग का महत्व।

(ii) ट्रेनिंग (अभ्यास) और प्रशिक्षण (कोचिंग) का अर्थ एवं परिभाषा, उद्देश्य, कार्य एवं विशेषताएं। खेल ट्रेनिंग के सिद्धान्त तथा योग में उनका महत्व। प्रशिक्षण का दर्शन एवं प्रशिक्षक के गुण, प्रशिक्षक की योग्यता। अनुकूलन।

(iii) अधिभार का अर्थ परिभाषा, सिद्धान्त, कारण, लक्षण, अधिभार की सम्भालने के उपाय। ट्रेनिंग भार की परिभाषाएं, प्रकार, अवधारणा, सिद्धान्त।

(iv) शारीरिक दक्षता के घटक शक्ति परिभाषाएं, प्रकार (अधिकतम शक्ति, विस्फोटक शक्ति, शक्ति सहनशीलता), सहनशीलता-परिभाषा, विशेषताएं, प्रकार (1. खेल क्रियाओं के अनुसार : (ख) मूलभूत सहनशीलता, (ख) सामान्य सहनशीलता, (ग) विशिष्ट सहनशीलता। 2. समय अवधि के अनुसार : (क) चाल सहनीशीलता, (ख) सूक्ष्मकालीन सहनशीलता, (ग) मध्यकालीन सहनशीलता। लचीलापन-परिभाषा, विशेषताएं, प्रकार (क्रियाशील लचीलापन, अक्रियाशील लचीलापन) लचीलेपन के विकास की विधियां एवं सावधानियां। चाल-परिभाषा, विशेषताएं, प्रकार (प्रतिक्रिया योग्यता, गति की चाल, त्वरण योग्यता, प्रचलन योग्यता, चाल सहनशीलता)। समन्वय योग्यता – परिभाषा, विशेषताएं, प्रकार (निर्धारण योग्यता, प्रतिक्रिया योग्यता, संतुलित योग्यता, अनुकूलन योग्यता, युग्मन की योग्यता, पृथककरण की योग्यता, तालमेल योग्यता)।

(v) ट्रेनिंग की योग्यता, निर्माण का महत्व। योजना-निर्माण के सिद्धान्त। योजना-निर्माण प्रणाली तथा उसका योग में महत्व। अवधिकालीनता (तैयारीकाल, प्रतियोगिताकाल, संक्रमणकाल)। अवधिकालीनता के प्रकार (एकल अवधि कालीनता, दोहरी अवधि कालीनता) वार्मिंग अप (गर्माना) कूलिंग डाउन (शिथलीकरण)।

यूनिट -8

योग एवं सम्बद्ध विज्ञान

(i) आयुर्वेद का अर्थ, परिभाषा, प्रयोजन, इतिहास, आयुर्वेद के सिद्धान्त, आयुर्वेद का अंग।

(ii) दोष, धातु, मल, उपधातु, इन्द्रिय, अग्नि, प्राण, प्राणायाम, प्रकृति-देहप्रकृति व मनस् प्रकृति की समान्य की जानकारी।

(iii) योग एवं शिक्षा – शिक्षा की अवधारणा, महत्व एवं उद्देश्य, शिक्षा का क्षेत्र, शिक्षा में योग की आवश्यकता, योग के विभिन्न शिक्षणालयों का परिचय।

(iv) योग एवं स्वास्थ्य शिक्षा – स्वास्थ्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप।

(v) स्वास्थ्य शिक्षा – अर्थ एवं उद्देश्य, स्वास्थ्य रक्षा के सिद्धान्त, स्वास्थ्य रक्षा की विधियाँ।

(vi) योग एवं मूल्यपरक शिक्षा-मूल्यपरक शिक्षा की अवधारणा,

उद्देश्य एवं आधुनिक काल में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता, योग एवं मूल्यपरक शिक्षा में सम्बन्ध।

यूनिट -9

(अ) प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त

(i) प्राकृतिक चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास । प्राकृतिक चिकित्सा के मूल सिद्धान्त-रोग का मूल कारण, रोग की तीव्र व जीर्ण अवस्थाएं। विजातीय विष का सिद्धान्त। जीवनी शक्ति बढ़ाने के उपाय। आकृति निदान।

(ii) जल चिकित्सा : जल का महत्व, जल के गुण, विभिन्न तापक्रम के जल का शरीर पर प्रभाव, जल चिकित्सा के सिद्धान्त, जल प्रयोग की विधियां। जलपान, प्राकृतिक स्नाना, साधारण व घर्षण स्नान। कटि स्नान, मेहन स्नान, वाष्प स्नान, रीढ़ स्नान, उष्ण पाद स्नान, पूरे शरीर की गीली पट्टी। छाती, पेट, गले व हाथ-पैर की पट्टियां। स्पंज, एनिमा।

(iii) मिट्टी, सूर्य व वायु चिकित्सा-मिट्टी का महत्व, प्रकार व गुण। शरीर पर मिट्टी का प्रभाव मिट्टी की पट्टियां। मृतिका स्नान। सूर्य प्रकाश का महत्व, शरीर पर सूर्य प्रकाश की क्रिया-प्रक्रिया, सूर्य स्नान। विभिन्न रंगों का प्रयोग। वायु का महत्व। वायु का आरोग्यकारी प्रभाव। वायु स्नान।

(iv) उपवास-सिद्धान्त व शारीरिक क्रिया-प्रतिक्रिया, आरोग्य हेतु उपवास। रोग का उभार व उपवास। उपवास के नियम, उपवास के प्रकार-दीर्घ, लघु, पूर्ण, अर्थ, जलोवास, रसोपवास, फलोपवास, एकाहारोपवास, आदर्श आहार, प्राकृतिक आहार, रोग निवारण में उपयुक्त आहार, आदर्श आहार व संतुलित में अंतर।

(v) अभ्यंग की परिभाषा, इतिहास व महत्व । अभ्यंग का विभिन्न अंगों पर प्रभाव विधियां-सामान्य, घर्षण, थपकी, मसलना, दलना, दबाना, कम्पन, सहलाना, झकझोरना, तल, मुक्की, चुटकी आदि। रोगों में अभ्यंग की महत्ता।

(ब) वैकल्पिक चिकित्सा

(i) वैकल्पिक चिकित्सा : वैकल्पिक चिकित्सा के अवधारणा/वैकल्पिक चिकित्सा के क्षेत्र व सीमा/वैकल्पिक चिकित्सा का महत्व/वैकल्पिक चिकित्सा एवं योग का सम्बन्ध।

(ii) एक्यूप्रेशर : एक्यूप्रेशर का अर्थ, इतिहास एवं एक्यूप्रेशर के सिद्धान्त एवं विधि, एक्यूप्रेशर के उपकरण, एक्यूप्रेशर के लाभ, विभिन्न दाब बिन्दुओं का परिचय, सुजोक-परिचय, एक्यूप्रेशर एवं सुजोक में साम्यता एवं विषमता।

(iii) प्राप्ति चिकित्सा : प्राण का अर्थ, स्वरूप, प्राण चिकित्सा का परिचय, इतिहास एवं सिद्धान्त, ऊर्जा केन्द्र, प्राण चिकित्सा की विभिन्न विधियां।

(iv) पंचकर्म चिकित्सा: पूर्व कर्म-स्नेहन, स्वेदन, मुख्य कर्म -वमन, विरेचन, आस्थापन बस्ति, अनुवासन बस्ति, शिरोविरेचन की विधि, सावधानियां एवं लाभ/पश्चात् कर्म-संसजर्न कर्म, रसायन, बाजीकरण प्रयोग।

(v) चुम्बक चिकित्सा : अर्थ, स्वरूप, क्षेत्र, सीमाएं एवं सिद्धान्त, चुम्बक के विभिन्न प्रकार, चुम्बक चिकित्सा की विधि एवं विभिन्न रोगों पर चुम्बक का प्रभाव।

यूनिट-10

(अ) योग में अनुसंधान विधियां

(i) अनुसंधान का स्वरूप, अनुसंधान की विधियां, वैज्ञानिक विधि, योग में अनुसंधान का महत्व।

(ii) समस्या - अर्थ एवं स्वरूप, परिकल्पना का स्वरूप एवं कथन। प्रतिदर्श-अर्थ एवं चयन विधियां।

(iii) अनुसंधान विधियाँ - निरीक्षण - विधि, सहसम्बन्धात्मक विधि, प्रयोगात्मक विधि।

(iv) नियंत्रण-स्वरूप, स्वतंत्र व आश्रित चर, नियंत्रण विधियाँ।

(v) प्रायोगिक अनुसंधान विधियाँ - प्रायोगिक अभिकल्प, शोध अभिकल्प (दो यादृच्छिक अभिकल्प, कारकीय-अभिकल्प)।

(ब) सांख्यिकीय विधियां

(i) सांख्यिकी का अर्थ एवं महत्व, अनुसंधान, आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण एवं वितरण आवृत्ति वितरण, लेखाचित्रीय अंकन (आवृत्ति, बहुलक, स्तम्भाकृति)।

(ii) केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप : व्यवस्थित व अव्यवस्थित आंकड़ों का मूल्यांकन, मध्यांक एवं बहुलक की गणन। विचलन की माप-प्रसार क्षेत्र, चतुर्थास और आन्तरिक विचलन।

(iii) सामान्य वक्र-अर्थ, महत्व और उपयोग। कोटि अन्तर विधि व्यवस्थित तथा अव्यवस्थित आंकड़ों का आघूर्ण विधि (product) द्वारा momentum ज्ञात करना।

(iv) प्रतिगमन-प्रतिगमन समीकरण-विचलन रूप और प्रबन्धक रूप, अनुमान की प्रामाणिक त्रुटि का स्क्वायर परीक्षण मध्यांक परीक्षण। (mediantect)

(v) मध्यमान की सार्थकता, मध्यमानों के मध्य के अंतर की सार्थकता (critical ratio), टी परिमापन, प्रसरण, विश्लेषण (oneway)

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान (कोड संख्या -यूएसयू-15)

यूनिट-1

भाषा एवं भाषा विज्ञान

(i) भाषा विज्ञान का अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र, अध्ययन पद्धतियाँ।

(ii) भाषा विज्ञान का अन्य विषयों से सम्बन्ध एवं तुलनात्मक अध्ययन।

(iii) भाषा-अर्थ, एवं परिभाषा, भाषा के विविध रूप।

(iv) भाषा की प्रकृति-विशेषताओं एवं भाषा परिवर्तन।

(v) संसार की भाषाओं का वर्गीकरण।

(vi) पारिवारिक वर्गीकरण एवं आकृतिमूलक वर्गीकरण की विशेषताएं, तुलनात्मक अध्ययन।

(vii) संसार के प्रमुख भाषा परिवार।

(viii) भारतीय परिवार का अध्ययन।

ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान

(क) ध्वनि विज्ञान

(i) ध्वनि का अर्थ एवं परिभाषा।

(ii) स्वन एवं स्वनिम का अर्थ, महत्व।

(iii) ध्वनियों का वर्गीकरण।

(iv) ध्वनि गुण-मात्रा, आघात, बलाघात, स्वरित। अल्पप्राण-महाप्राण, घोष-अघोष।

(v) ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ।

(vi) ध्वनि नियम-प्रसिद्ध ध्वनि नियम, ग्रिम नियम, ग्रेसमैन नियम, बर्नर नियम आदि।

(vii) हिन्दी स्वनिम। (स्वर, व्यंजन)।

(ब) रूपविज्ञान

(i) रूपविज्ञान: परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार।

(ii) रूपविज्ञान: तात्विक विवेचन।

(iii) रूप-विश्लेषण।

यूनिट-2

(क) अर्थविज्ञान एवं वाक्य विज्ञान

(अ)

(i) शब्द और अर्थ का सम्बन्ध - अर्थ-प्रतीति, अर्थ-बोध के साधन।

(ii) अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ, अर्थ परिवर्तन के कारण।

(iii) पर्याय विज्ञान-पर्यायों का विकास।

(iv) अनेकार्षता विलोमता, समानता।

(v) बौद्धिक नियम।

(vi) शब्द शक्तियाँ-अभिप्राय और उनकी महत्ता।

(vii) अर्थतत्व एवं संबंध तत्व का महत्व।

(ब)

(i) शब्द की परिभाषा एवं विशेषताएँ।

(ii) शब्दों का वर्गीकरण -(1) व्याकरण, (2) उद्गम, (3) (4) अर्थ के आधार पर।

(स)

(i) वाक्य विज्ञान का अर्थ, महत्व।

(ii) सामान्य एवं उच्चतर वाक्य विज्ञान।

(iii) वाक्य संरचना।

(iv) वाक्यों के प्रकार।

(ख) लिपि विज्ञान

(i) लिपि की उत्पत्ति, विकास एवं महत्व।

(ii) लिपि के विकास-क्रम की अवस्थाएं।

(iii) भारतीय लिपियाँ-सिन्धु घाटी की लिपि, खरोष्ठी, ब्राह्मी, देवन

(iv) द्रविड परिवार की भाषाएँ एवं उनकी लिपियाँ।

(v) लिपि की उपयोगिता।

(vi) देवनागरी लिपि का विकास।

(vii) देवनागरी लिपि के गुण और दोष।

(viii) लिपि में सुधार हेतु किए गए अब तक के प्रयास।

यूनिट-3

(अ)

(i) व्याकरण क्या है। भाषा विज्ञान एवं व्याकरण का संबंध।

(ii) भारतीय व्याकरण की परम्परा -

(अ) संस्कृत

(ब) प्राकृत

(स) हिन्दी

(iii) प्रमुख वैयाकरण: पाश्चात्य एवं भारतीय

(iv) पाणिनी, पतंजलि, यास्क का व्याकरणिक महत्व(अष्टाध्यायं महाभाष्य)

(v) हिन्दी वैयाकरण पं. कामता प्रसाद गुरु, आचार्य किशोरी दास वा सुनीति चटर्जी।

(ब)

(i) रूपान्तरणपरक व्याकरण की अवधारणा।

(ii) रूपान्तरणपरक प्रजनक व्याकरण के संदर्भ में चामस्की की देन।

(iii) अभ्यन्तर एवं बाह्य संरचना, रूपान्तरण नियम, भाषायी सिद्ध और भाषा विराम, व्याकरणिकता।

(iv) जी.वी. सिद्धान्त।

(v) पाणिनी का कारक सिद्धान्त व कारक व्याकरण और उनकी मान्यताएं।

यूनिट-4

कम्प्यूटर : संरचना एवं प्रोग्रामिंग

(i) सूचना प्रौद्योगिकी एक सामान्य परिचय, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास।

(ii) कम्प्यूटर का सामान्य परिचय।

(iii) भाषा और कम्प्यूटर।

(iv) हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर (सिस्टम सॉफ्टवेयर, एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर)।

(v) कम्प्यूटर प्रोग्रामिंक के घटक।

(vi) डाटाबेस : संरचना एवं प्रबंधन-(प्रोसेस मैनेजमेंट), (मेमोरी मैनेजमेंट) (फाइल मैनेजमेंट)।

कम्प्यूटर अनुप्रयोग

(i) आपरेटिंग सिस्टम (डास, विंडोज, लाइनक्स)।

(ii) Open Office/MS Office की सहायता से अंग्रेजी/हिन्दी/संस्कृत में वर्ड प्रोसेसिंग, lleap तथा वराहक सॉफ्टवेयर का परिचय।

(iii) ASCII, ISCII एवम् अन्य Fonts, TTF एवं open type font कन्वर्टर्स, देवनागरी एवं अन्य भारतीय लिपियों की विशेषता।

(iv) डास एवं लाइनक्स के फाइल व डाइरेक्टरी सम्बन्धित कमांड्स, लाइनक्स के shell commands, grep, sort, search, आदि utilities की जानकारी।

(v) डाटा (सूचना) एवं कम्प्यूटर प्रणाली की सुरक्षा। कम्प्यूटर वायरस एवं उनसे बचाव के उपाय।

यूनिट-5

भाषा प्रौद्योगिकी

(i) भाषा प्रौद्योगिकी : अवधारणा, भाषा के तकनीकी पहलू।

(ii) भाषा प्रौद्योगिकी : उद्भव।

(iii) भाषा प्रौद्योगिकी : प्रकार एवं विवेचन। विविध आयाम।

(iv) भाषा प्रौद्योगिकी : वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएं।

(v) भाषा इंजीनियरिंग (अभियांत्रिकी)

(vi) कार्पस भाषा विज्ञान : परिभाषा, प्रकार एवं उपयोग।

कम्प्यूटेशनल भाषा विज्ञान

(i) संगणकीय भाषा विज्ञान : एक परिचय, मौलिक, अवधारणाएं, सर्वेक्षण और उपलब्ध सामग्री परिचय।

(ii) संस्कृत हिन्दी के संदर्भ में कम्प्यूटर का व्याकरण, न्याय, मीमांसा एवं एन.एल.पी. के लिये कम्प्यूटर का उपयोग।

(iii) संस्कृत व हिन्दी के लिये संगणक का उपयोग, lexical resource, विश्लेषक उपकरण OCR, digitcation

(iv) इंटरनेट : सर्च इंजन, वेब डिजाइन, ब्राउचर, मेल, टेलनेट।

(v) संगणक की दृष्टि से अष्टाध्यायी की सरंचना।

प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP) एवं अनुप्रयोग

(i) NLP का इतिहास एवं विकास

(ii) NLPअर्थ, परिभाषा एवं उपयोगिता।

(iii) प्राकृतिक भाषा-संसाधन : प्रक्रिया एवं प्रबंधन।

(iv) वाक्-संसाधन।

(v) शब्द-संसाधन।

(vi) पाठ-संसाधन

यूनिट-6

अनुवाद : विविध आयाम

अनुवाद के आयाम : अनुवाद की महत्ता, स्वरूप एवं अर्थ।

(i) अनुवाद का संरचनात्मक पहलू।

(ii) व्यतिरेकी अध्ययन
व्यतिरेकी विश्लेषण
वयतिरेकी भाषा विज्ञान

(iii) उक्ति, प्रोक्ति, सूक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति।

(iv) अनुवाद की विचाराधाराएं (प्राचीनकाल से लेकर उत्तर आधुनिक तक)।

(v) भाषा विज्ञान और अनुवाद का शास्त्र।

(vi) अनुवाद का व्यावहारिक पक्ष।

(vii) अनुवाद का उत्तर अनुवाद।

अनुप्रयुक्त अनुवाद

(अ) अनुवाद : सिद्धान्त और प्रकार :

(i) अनुवाद : समस्या एवं परीक्षण, समाधान।

(ii) अनुवाद : अनुप्रयोग :
वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद।
साहित्यिक-सांस्कृतिक अनुवाद।
मानविकी एवं समाज विज्ञान अनुवाद।
विधि अनुवाद।
कार्यालयी एवं प्रशासनिक अनुवाद।
मीडिया के लिए अनुवाद।
बोलियों का अनुवाद एवं उसकी चुनौतियां

(ब) तकनीकी अनुवादः

(i) परिचय और इतिहास।

(ii) विविध अधिगम।

(iii) व्याकरणिक ढांचा।

(iv) अनुवाद की समस्याएं।

यूनिट-7

कोश विज्ञान एवं व्युत्पति विज्ञान

(अ)

(i) कोशविज्ञान : सिद्धान्त और प्रकार। कोश: परिभाषा, स्वरूप, महत्व, भेद।

(ii) कोश निर्माण प्रक्रिया

(iii) नियोजन, सामग्री संकलन, प्रविष्टि चयन, प्रविष्टि की संरचना, प्रविष्टि, क्रम, संदर्भ-प्रतिसंदर्भ, मुद्रणप्रति तैयार करना।

(iv) भारतीय एवं पाश्चात्य कोश निर्माण प्रक्रिया।

(v) कोशों के प्रकार-समभाषिक, द्विभाषिक, बहुभाषिक।

(vi) व्युत्पत्ति विज्ञान का अर्थ, स्वरूप एवं महत्व।

(ब)

(i) कम्प्यूटर आधारित कोश-विज्ञान : एक परिचय।

(ii) कोश-निर्माण के संसाधन, सामग्री संकलन और प्रोसेसिंग तकनीक।

(iii) कोश के विभिन्न घुटकों की प्रकृति और सामग्री प्रस्तुति शैली।

(iv) कोश (प्रयोजन), प्रविष्टि, चयन, अर्थ-संपादन और विभिन्न संपादन टूल्स।

(v) पारिवारिक शब्दावली : संकल्पना, स्वरूप एवं विशेषताएं, परिभाषिक शब्दावली निर्माण के मार्गदर्शी सिद्धान्त एवं समस्याएं।

साहित्य शास्त्र एवं शैली विज्ञान

(अ) शैली : अर्थ एवं परिभाषा, विभाषा और शैली, प्रयुक्ति और शैली।

(i) शैली विज्ञान : सामान्य परिचय एवं अध्ययन क्षेत्र।

(ii) शैली विज्ञान के विविध प्रकार : भाषिक एवं साहित्यिक शैली विज्ञान।

(iii) शैली विज्ञान : प्रतिमान विवेचन।

(iv) शैली विज्ञान एवं शैलों विश्लेषण।

(v) शैली : उपयोगिता एवं आवश्यकता।

(vi) संकेत विज्ञान : संकेत और प्रतीक, संकेतार्थ, संकेत और संस्कृति।

(vii) तुलनात्मक शैली विज्ञान।

(ब)

(i) भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्त

(ii) काव्य भाषा और सामान्य भाषा में अन्तर, काव्य भाषा की प्रक्रियाएं, चयन, समानान्तरता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता।

(iii) काव्य-सिद्धान्त, काव्य की आत्मा।

(iv) रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि, रीति एवं औचित्य सिद्धान्त।

यूनिट-8

भाषा-कौशल एवं शिक्षण

(अ) भाषा विज्ञान :

(i) भाषा शिक्षण : स्वरूप, अर्थ और अभिप्राय, उद्देश्य।

(ii) भाषा शिक्षण : सिद्धान्त एवं प्रविधि : व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, श्रवण-भाषण विधि, स्वाध्याय-विधि, सम्प्रेषणात्मक विधि।

(iii) भाषा अधिगम : सिद्धान्त एवं विवेचन।

(iv) शिक्षण सामग्री : विश्लेषण एवं परीक्षण।

(v) कम्प्यूटर आधारित भाषा शिक्षण (CALT)

(vi) प्राथमिक (मातृ) भाषा का शिक्षण।

(vii) द्वितीय भाषा का शिक्षण : भाषा की संस्कृति, साहित्य और शब्दार्थ विनिमय।

(viii) विदेशी भाषा शिक्षण : विदेशी भाषा की परिवेशगत विशेषताएं। माध्यम भाषा से समानताएं, असमानताएं।

(ब) भाषा कौशल : श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन, अभिरचना, अभ्यास मनोभाषा विज्ञान।

(i) बच्चे द्वारा भाषा-ग्रहण की प्रक्रिया।

(ii) भाषा परीक्षण एवं मूल्यांकन, भाषा ग्रहण में निदानात्मक एवं उपचारात्मक विधियां।

(iii) भाषा विकार (डिसलेक्सिया, एनोमिया, अपासिया आदि)।

(iv) भाषा प्रयोग और मस्तिष्क।

(v) मातृभाषा से इतर भाषा सीखने में बाधाएं एवं उनका समाधान।

(vi) भाषा विस्मृति।

(vii) स्पीच थैरेपी।

(viii) समाजिक-सांस्कृतिक स्थितियों का भाषा अधिगम का प्रभाव।

(ix) स्त्री एवं पुरूष भाषा, दोनों का गठन एवं अंतर।

यूनिट-9

शोध-प्रविधि

(अ)

(i) शोध : परिचय एवं प्रकार (Classification)

(ii) शोध : ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक एवं तुलनात्मक सर्वेक्षण।

(iii) शोध-प्रविधि : विविध प्रविधियाँ एवं उनकी व्यवहारिकता।

(iv) शोध-प्रविधि : मापदण्ड एवं मूल्यांकन, आधार सामग्री : संपादन, संवर्ग निम्रण, संकेतीकरण, समाजीकरण।

(v) ग्रन्थानुक्रमाणिका एवं इसकी महत्ता।

(ब)

(i) शोध-संक्षेपिका निर्माण, शोध प्रतिवेदन, परियोजना प्रतिवेदन,

(ii) भाषा-सर्वे / आंकड़ा संग्रहण

यूनिट-10

विशेष अध्ययन

(अ) आधुनिक भाषा या बोली भाषा - वैज्ञानिक अध्ययन

(i) हिन्दी (ध्वनियां, उपसर्ग-प्रत्तय, संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण, क्रिया, अव्यय, शब्द-भण्डार, वाक्य पद)

(ब) प्राच्य भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन

(i) संस्कृत (प्रकृति, उपसर्ग-प्रत्यय, शब्द-रूप, क्रिया-रूप (धातु) संधि-समास, वचन, विभक्तियां पुरूष)।

शिक्षा में विद्यावारिधि (प्री. पी–एच.डी) प्रवेश परीक्षा हेतु विषय वस्तु

1. शिक्षा के दार्शनिक आधार

(क) सम्प्रत्यय एवं परिभाषा, प्रकृति, सम्बन्ध, सांख्य, वेदान्त, न्याय, बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन, इस्लाम, सम्प्रत्यय, तत्व एवं मूल्य मीमांसा तथा इनका शैक्षिक निहितार्थ, तार्किक विश्लेषण, तार्किक अनुभववाद, सापेक्षवाद, प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, ज्ञान मीमांसा, तत्वमीमांसा एवं मूल्यमीमांसा के सन्दर्भ में, तथा इनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, विषयवस्तु शिक्षणविधि एवं शैक्षिक निहितार्थ, स्वतन्त्रता, समानता, समसामायिक भारतीय शिक्षा में भारतीय दार्शनिकों के योगदान को समझ सकेंगे, हमारे जीवन में शैक्षिक मूल्यों के प्रभाव को समझ सकेंगे, भारतीय संविधान द्वारा शिक्षा के लिए किए गए प्रावधानों की व्याख्या कर सकेंगे, लोकतन्त्र की विशेषताओं एवं कार्यों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, यथार्थवाद, तार्किक सापेक्षवाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, ज्ञान मीमांसा, मूल्य मीमांसा एवं तत्त्व मीमांसा, तथा इन का शिक्षा के उद्देश्य, विषय वस्तु एवं शिक्षण–विधियों के सन्दर्भ में शैक्षिक निहितार्थ, विवेकानन्द, गाँधी, टैगोर, अरविन्दो, जे0 कृष्णमूर्ति, शिक्षा एवं इस की राष्ट्रीय मूल्य विकास में भूमिका (विकासशील देशों के सन्दर्भ में), भारतीय संविधान, लोकतन्त्र, उत्तरदायित्व।

2. शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

समाजिक संस्थाएं एवं इनका सम्प्रत्यय, समाजिक संस्थाओं को प्रभावित करने वाले कारक लोक परम्पराएं, समुदाय, विभिन्न संस्थाएं एवं मूल्य, सामाजिक संस्थाओं के गत्यामक विशेषताएं एवं इनका शैक्षिक निहितार्थ, सामाजिक समूह एंव अन्य समूहों के साथ सम्बन्ध समूह गतिशीलता, सामाजिक स्तरीकरण, सम्प्रत्यय एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ, संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की भूमिका, शिक्षा के सांस्कृतिक निर्धारक तत्व, शिक्षा और सांस्कृतिक परिवर्तन, सामाजिक परिर्वतन– अर्थ, सम्प्रत्यय (भारतीय सन्दर्भ में) शहरीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, एवं सांस्कृतिकरण का सम्प्रत्यय (भारतीय सन्दर्भ में) एवं इसका शैक्षिक निहितार्थ, सामाजिक–आर्थिक कारक एवं इनका शिक्षा पर प्रभाव, समाज के आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ा वर्ग विशेष रूप से अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग, महिला एवं ग्रामीण जनसंख्या, लोकतन्त्र, स्वतन्त्रता, राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय समन्वय, अन्तर्राष्ट्रिय सद्भाव, सामाजिक प्रणली के रूप में, सामाजीकरण की प्रक्रिया के रूप में, सामाजिक विकास की प्रक्रिया के रूप में, शिक्षा एवं राजनीति, शिक्षा एवं धर्म, सामाजिक समता एवं शैक्षिक अवसरों की समान्ता के सन्दर्भ में शिक्षा, शैक्षिक अवसरों की असमानता एवं उसका सामाजिक विकास पर प्रभाव, सामाजिक सिद्धान्त (सामाजिक परिवर्तन के सम्बन्ध में)–मार्क्सवाद, समग्र मानवता वाद (स्वदेशी पर आधारित)

3. शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सम्बन्ध, शैक्षिक मनोविज्ञान का क्षेत्र, प्रयोगात्मक, उपचारात्मक, डिफरेशियल, शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, मानसिक सम्प्रत्यय एवं क्षेत्र निर्धारक तत्त्व–वैयक्तिक भिन्नता में वंशानुक्रम एवं वातावरण की भूमिका, शैक्षिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए वैयक्तिक भिन्नता का महत्त्व,अर्थ एवं विशेषताएं, आवश्यकता एवं समस्याएं, सम्प्रत्यय, विशेषताएं, सृजनात्मकता का विकास, शिक्षा में सृजनात्मकता का महत्त्व, बुद्धि की परिभाषा एवं प्रकृति, सिद्धान्त–द्विकारक सिद्धान्त (स्पीयरमैन)। बहुकारक सिद्धान्त, समूहकारक सिद्धान्त), गिलफोर्ड की बुद्धि की संरचना, पदानुक्रमिता, बुद्धि का मापन (दो शाब्दिक एवं दो अशाब्दिक परीक्षण, अर्थ एवं निर्धारक तत्त्व। प्रकार एवं गुण सिद्धान्त, व्यक्तित्व परीक्षण (आत्मनिष्ठ एवं प्रक्षेपी विधियां), अर्थ, सिद्धान्त एवं इनका शैक्षिक निहितार्थ–पॉवलाव का शास्त्रीय अनुबन्धन, स्कीनर का क्रिया प्रसूत, अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त, लेविन का क्षेत्र सिद्धान्त, गैने का अधिगमपदानुक्रमिता, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, सम्प्रत्यय, अभिप्रेरणा के सिद्धान्त–शारीरिक सिद्धान्त, मुरे की आवश्यकता सिद्धान्त, मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त, मैस्लो का आवश्यकता पदानुक्रमिता का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक, मानसिक स्वास्थ्य एवं विज्ञान– समायोजन एवं समायोजन की प्रक्रिया, सुरक्षा प्रतिविधि।

4. शिक्षा में अनुसन्धान विधियां

वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्ति की विधियां, परम्पराएं, अनुभव, तर्क, अगमनात्मक एवं निगमानात्मक शैक्षिक अनुसन्धान की प्रकृति एवं क्षेत्र–अर्थ, प्रकृति, एवं सीमाएं, शैक्षिक अनुसन्धान की आवश्यकता एवं उद्देश्य, वैज्ञानिक खोज एवं सिद्धान्त का विकास, मूलभूत, अनुप्रयोगात्मक एवं क्रियात्मक अनुसन्धान, गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसन्धान। शैक्षिक अनुसन्धान में प्रचलित नवीन प्रणालियां–अनुसंन्धान की समस्या का निर्माण–समस्या के पहचान के लिए स्रोत एवं कसौटी, चरों की पहचान एवं क्रियान्वयन, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन, महत्त्व एवं विभिन्न स्रोत (इन्टरनेट इत्यादि) अनुसन्धानों में के विभिन्न प्रकार के परिकल्पनाओं का निमार्ण आंकड़ों के प्रकार, गुणात्मक एवं मात्रात्मक, शोध के उपकरण, विधियाँ एवं इनकी विशेषताएं, अच्छे शोध उपकरण के गुण, प्रश्नावली ,साक्षात्कार, अवलोकन समाजमिति विधियां,प्रक्षेपी विधियां अच्छे न्यादर्श के गुण एवं सोपान, न्यादर्श की विभिन्न विधियां–सम्भाव्य एवं असम्भाव्य, न्यादर्श त्रुटियां एवं इसे कैसे कम कर सकते है, अनुसन्धान के प्रमुख दृष्टिकोण–वर्णनात्मक उपागम कार्योत्तर अनुसन्धान, प्रयोगशाला अनुसन्धान, क्षेत्र अध्ययन, ऐतिहासिक अनुसन्धान, अनुसन्धान प्रारूप–अर्थ, सम्प्रत्यय, प्रकार एवं उपादेयता। एन्थोग्राफिक एथनोग्राफिक्स विकासात्मक, डॉक्यूमेन्टरी विश्लेषण, निष्कर्ष की वैधता एवं सीमाएँ, अनुसन्धान की वैधता को प्रभावित करने वाले कारक, अनुसन्धान के निष्कर्ष की वैधता को कैसे बढ़ा सकते हैं ? अनुसन्धान प्रस्ताव तैयार करना (शोध संक्षिप्तिका), अनुसन्धान प्रतिवेदन लिखना एवं मूल्यांकन करना।

5. भारतीय शिक्षा की समसामयिक सन्दर्भ

वैदिककाल, बौद्धकाल, मध्यकाल (मुगलकाल), एडम का प्रतिवेदन एवं सुझाव, वुड घोषणा पत्र 1854, लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन, (क) सैडलर कमीशन का प्रतिवेदन 1917 एवं इसके आवश्यक प्रावधान, हर्न्टांग समीति एवं इसके सुझाव,(ख) सार्जेन्ट प्रतिवेदन 1944(ग) विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948–49 माध्यमिक शिक्षा आयोग, 1952–53, भारतीय शिक्षा आयोग – 1964–66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986, संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1992, शिक्षा का सार्वभौमिकरण एवं अन्य सम्बन्धित विषय जैसे प्राथमिक शिक्षा में साक्षरता एवं पूर्णता दर आदि, शिक्षा का व्यवसायीकरण, बालिकाओं के लिए शिक्षा, सामाजिक रूप से पिछडे वर्ग –अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ी जाति के लोगों की शिक्षा, शिक्षा में गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता से सम्बन्धित विषय, शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान करने वाले सामाजिक समता से सम्बन्धित विषय, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं (ओपन लर्निगं) मुक्त अधिगम से सम्बन्धित विषय, जीवन कौशल एवं मानव मूल्यों के लिए शिक्षा, शिक्षा के माध्यम (भाषा चयन) से सम्बन्धित विषय–त्रिभाषा सूत्र, वैश्विक सन्दर्भ में भावात्मक एकता एवं अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध से सम्बन्धित विषय।।

संकाय सदस्यों की सूची

व्याकरण विभाग

1. डॉ. शैलेश तिवारी, व्याकरणाचार्य, नेट, पी-एच.डी., सह-प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2. डॉ. दामोदर परगांई, व्याकरणाचार्य, नेट, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर
3. डॉ. राकेश सिंह, व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर

साहित्य विभाग

1. डॉ. हरीश तिवारी, साहित्याचार्य, पी-एच.डी., सह-प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2. डॉ. प्रतिभा शुक्ला, एम.ए.संस्कृत, पी-एच.डी., सह-प्रोफेसर
3. डॉ. मनोज किशोर पंत, एम.ए., साहित्याचार्य, दर्शनाचार्य, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर
4. डॉ. रामरतन खण्डेलवाल, एम.ए., नेट, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर एवं प्रभारी विभागाध्यक्ष (पुस्तकालय विज्ञान)
5. डॉ. कंचन तिवारी, साहित्याचार्य, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर

ज्योतिष विभाग

1. डॉ. रत्न लाल, ज्योतिषाचार्य, एम.ए., नेट, पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर एवं प्रभारी विभागाध्यक्ष

योगविज्ञान विभाग

1. डॉ. कामाख्या कुमार, एम.ए. योग, पी-एच.डी. सह प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण जोशी, एम.पी.एड., एम.ए.(योग), पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर

हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग

1. प्रो. दिनेश चन्द, चमोली, एम.ए. हिन्दी, पी-एच.डी., प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
2. डॉ. सुशील कुमार, एम.ए. नेट(हिन्दी, पत्रकारिता-जनसंचार), पी-एच.डी., सहायक प्रोफेसर
3. डॉ. उमेश शुक्ला, पी-एच.डी., नेट, हिन्दी, सहायक प्रोफेसर

शिक्षाशास्त्र विभाग

1. प्रो. मोहनचन्द्र बलोदी, शिक्षाचार्य, ज्योतिषाचार्य, पी-एच.डी. (शिक्षा), विभागाध्यक्ष
2. डॉ. अरविन्दनारायण मिश्र, एम.एड., एम.ए. (संस्कृत), नेट (संस्कृत), पी-एच.डी., (शिक्षा) सहायक प्रोफेसर
3. डॉ. प्रकाशचन्द्र पन्त, एम.एड., एम.ए., पी-एच.डी., (संस्कृत, शिक्षा) सहायक प्रोफेसर
4. डॉ. बिन्दुमती द्विवेदी, एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी), नेट, एम.फिल., पी-एच.डी., (संस्कृत) सहायक प्रोफेसर
5. डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार, एम.एड., एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत), नेट (संस्कृत, शिक्षा), पी-एच.डी., (शिक्षा) सहायक प्रोफेसर
6. श्री सुमन भट्ट, शिक्षाचार्य, नेट-सहायक प्रोफेसर
7. कु. मीनाक्षी, एम.एड, सेट (उत्तराखण्ड राज्य) सहायक प्रोफेसर

शैक्षणिक कलैण्डर

1.	आवेदन उपलब्ध होने की तिथि	27 फरवरी, 2017
2.	आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि	20 मार्च, 2017
3.	पी–एच.डी. प्रवेश परीक्षा की तिथि	05 अप्रैल, 2017
4.	पी–एच.डी. प्रवेश परीक्षा परिणाम घोषणा	20 अप्रैल, 2017
5.	विभागीय समिति की बैठक की अंतिम तिथि	05 मई, 2017
6.	प्री–पी–एच.डी. कोर्स का प्रारम्भ	10 मई, 2017
7.	प्री–पी–एच.डी. कोर्स की परीक्षा	10 अक्टूबर, 2017
8.	प्री–पी–एच.डी. कोर्स का परीक्षा परिणाम	30 अक्टूबर, 2017
9.	शोध विषय के सारसंग्रह के साथ आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि	10 नवम्बर, 2017
10.	आर.डी.सी. बैठक की अंतिम तिथि	25 नवम्बर, 2017

नोट :

- आर.डी.सी. बैठक की तिथि के सम्बन्ध में शोधार्थी को रजिस्टर्ड डाक से अवगत कराया जायेगा।
- आवश्यकतानुसार तिथियों में परिवर्तन किया जा सकता है।

एम.फिल. से सम्बन्धित विभिन्न शुल्कों का विवरण

1.	प्रवेश परीक्षा शुल्क	रू0	1000.00
2.	कोर्स वर्क में प्रवेश के लिए काउंसलिंग शुल्क	रू0	1000.00
3.	कोर्स वर्क के बाद एम.फिल. पंजीकरण शुल्क	रू0	5000.00
4.	मासिक शुल्क	रू0	250.00
5.	पुस्तकालय मासिक शुल्क	रू0	100.00
6.	पुस्तकालय सुरक्षा धन (Refundable)	रू0	1000.00
7.	शोध प्रबन्ध जमा कराने का शुल्क	रू0	5000.00
8.	संशोधन के बाद शोध प्रबंध जमा कराने का शुल्क	रू0	5000.00
9.	उपाधि शुल्क	रू0	500.00
10.	अस्थाई प्रमाण पत्र (प्रोविजनल) शुल्क	रू0	100.00

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) से सम्बन्धित विभिन्न शुल्क जो निर्धारित किये गये हैं निम्नवत् हैं।

1. प्रवेश परीक्षा शुल्क रू0 1000.00
2. विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम कोर्स वर्क में प्रवेश के लिए काउंसलिंग शुल्क रू0 1000.00

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क) हेतु विभिन्न शुल्कों का विवरण–

1. एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स-वर्क) के आवेदन पत्र शुल्क रू0 20.00
2. एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क) हेतु शुल्क रू0 1000.00
3. मासिक शुल्क रू0 500.00
4. पुस्तकालय मासिक शुल्क रू0 200.00
5. पुस्तकालय शुल्क (सुरक्षा धनराशि) रू0 1000.00
6. परिचय पत्र शुल्क रू0 50.00

कुल योग रू0 2770.00

7. एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क) के परीक्षा आवेदन पत्र शुल्क रू0 20.00
8. नामांकन शुल्क रू0 100.00
9. परीक्षा शुल्क रू0 500.00

कुल योग रू0 620.00

10. विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम कोर्स वर्क द्वितीय प्रति लब्धांक पत्र शुल्क रू0 200.00
11. विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम कोर्स वर्क द्वितीय प्रति परिचय पत्र शुल्क रू0 100.00
12. विद्यावारिधि (पीएच.डी.) एक सत्रीय अनिवार्य पाठ्यक्रम (कोर्स वर्क) उत्तीर्ण करने के पश्चात शोध समिति (R.D.C.) की बैठक आहूत की जायेगी जिसमें साक्षात्कार सम्पन्न होने के उपरान्त पंजीकरण किया जायेगा। शुल्कों का विवरण निम्नवत होगा –

विद्यावारिधि (पीएच.डी. से सम्बन्धित शुल्कों का विवरण :

विद्यावारिधि (पीएच.डी.) पंजीकरण शुल्क रू0 5000.00

त्रैमासिक प्रगति विवरण शुल्क रू0 1050.00

1. मासिक शुल्क रू0 250.00
2. पुस्तकालय मासिक शुल्क रू0 100.00

कुल योग रू0 350.00

पुस्तकालय सुरक्षा धन (Refundable) रू0 1000.00

शोध प्रबन्ध जमा कराने का शुल्क रू0 5000.00

संशोधन के बाद शोध प्रबंध जमा कराने का शुल्क रू0 5000.00

उपाधि शुल्क रू0 500.00

अस्थाई प्रमाण पत्र (प्रोविजनल) शुल्क रू0 100.00

रैगिंग-एक दण्डनीय अपराध

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) के रैगिंग निषेध अधिनियम 2009 के नियम-7 के अनुसार रैगिंग एक आपराधिक गतिविधि है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) रैगिंग अधिनियम 2009 के नियम-66.3 दिनांक 17 जून, 2009 के अनुसार विश्वविद्यालय परिसर में रैगिंग निषेध समिति का गठन हुआ।

विश्वविद्यालय प्रशासन के संज्ञान में यदि रैगिंग संबंधी कोई भी घटना सामने आती है, तो सम्बन्धित से इस संदर्भ में स्पष्टीकरण मांगा जायेगा, संतोषजनक उत्तर न पाये जाने की स्थिति में संबंधित को विश्वविद्यालय से निष्कासित भी किया जा सकता है।

वयं देवानां सुमतौ स्याम

क्र0सं0 .....

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः,

पो0 बहादराबादं, हरिद्वारम्

पूर्वपाठ्यक्रम-प्रवेशावेदनपत्रम् (प्री पी-एच.डी./एम.फिल.)

विद्यावारिधिः/विशिष्टाचार्यः

सत्रम् .....

नूतनं
छायाचित्रम्
संश्लेषणीयम्

यस्मिन् पाठ्यक्रमे प्रवेशो वांछितः.....

शुल्कम् रसीद सं ..... दिनांकः .....

संकायः ..... विभागः .....

विषयः .....

1. उत्तीर्ण-परीक्षा (येनाधारेण प्रवेशो वांछितः) .....
2. छात्र/छात्रा नाम (हाईस्कूल प्रमाण-पत्रानुसारम्)
   (क) हिन्द्याम् .....
   (ख) अंग्रेजी (स्थूलाक्षरेषु) .....
3. जन्मतिथि (हाईस्कूल प्रमाण-पत्रानुसारम्) (अंकेषु) ..... (शब्देषु) .....
4. पितृनाम (हिन्द्याम्) ..... अंग्रेजी(स्थूलाक्षरेषु) .....
5. मातृनाम (हिन्द्याम्) ..... अंग्रेजी(स्थूलाक्षरेषु) .....
6. स्थायीपत्राचारसंकेतः ..... वर्तमानपत्राचारसंकेतः .....
   .....
   ..... फोन नं0/मो0नं0.....
7. स्थानीयसंरक्षकस्य नाम, तेन सह सम्बन्धःएवं पत्राचारस्य संकेतः .....
   ..... फोन नं0/मो0नं0.....
   जन्मस्थानम् .....जनपदः ..... राज्यम् ..... राष्ट्रीयता .....
8. अनुसूचितजातिः/जनजातिः/पिछड़ी जातिः/विकलांगः (प्रमाणपत्रं संलग्नं करणीयम्) .....
9. संस्थायाः नाम व पत्राचारसंकेतः (यतः पूर्वशिक्षा सम्प्राप्ता) .....
10. शैक्षिक-योग्यता(प्रमाणपत्रं तथा अंकपत्राणां प्रमाणितप्रतिलिपयः संयोजनीयाः) .....

उत्तीर्ण-परीक्षा	**बोर्ड/विश्वविद्यालयः**	**वर्षम्**	**श्रेणी**	**प्रतिशतम्**	**विषयः**
हाईस्कूल/समकक्ष					
इण्टरमीडिएट(10+2)					
अथवा समकक्ष-परीक्षा					
शास्त्री(स्नातक)					
आचार्य (स्नातकोत्तर)					
एम.फिल.					
अन्यानि-नेट/जे.आर.					
एफ./सेट यदि चेत्					

क्र0सं0 .....

उत्तराखण्डसंस्कृतविश्वविद्यालयः

पूर्वपाठ्यक्रम-प्रवेशावेदनपत्रम् (प्री पी-एच.डी./एम.फिल.)

छात्र/छात्रा नाम ..... पितृनामश्री ..... प्री.पी-एच.डी. (विद्यावारिधिः) विषये .....

..... प्रवेश-हेतवे आवेदनपत्रं प्राप्तम्। संलग्न-प्रमाणपत्राणां संख्या

दिनांक :

ह0लिपिकस्य

अहं घोषयामि यत् उपर्युक्तविवरणं मद्दृष्ट्या सत्यमस्ति।अहं विश्वविद्यालये अध्ययनसमये अन्यां कान्चित् परीक्षां नियमित/व्यक्तिगतछात्र/छात्रारूपेण न दास्यामि।अहं उत्तराखण्ड-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य पठन-पाठनस्य, आचरणस्य, स्वजनादिकस्य, प्रयासस्य, वेषभूषाया: तथा च रैगिंग इत्यादीनां नियमानां पालनं सम्यक्तया करिष्यामि। यदि कक्षायां मदीयोपस्थिति: नियमितरूपेण न भवेत् तदा प्रवेशनिरस्तीकरणस्य अधिकार विश्वविद्यालयस्य पार्श्वे भविष्यति विपरीताचारदशायां तथा च पृष्ठांकितविवरणस्य सत्यदशायां मत्प्रवेशो निरसनीय:।

ह0 पिता/संरक्षक:
दिनांक .....

ह0 छात्र/छात्रा
दिनांक .....

कार्यालयप्रयोगार्थम्

छात्र/छात्रा नाम ..... संरक्षक/पितृनाम श्री ..... द्वारा प्रस्तुत-शैक्षिक-योग्यता-सम्बन्धि प्रमाणपत्राणि अवलोकितानि। अभ्यर्थी आवेदित-पाठ्यक्रमाय निर्धारितां प्रवेश योग्यतां धारयति।अत: असौ / अस्यै प्री पी-एच.डी..... विषये ..... प्रविष्टिहेतवे संस्तुति: प्रदीयते। डॉ0/श्री/श्रीमती..... भवतां निर्देशका: भविष्यन्ति।

ह0 परीक्षक: निर्देशक: विभागाध्यक्ष: संकायाध्यक्ष:

दिनांक :

प्रवेशसमये प्रदत्तं शुल्कविवरणम्
शुल्कम् रू..... रसीद संख्या ..... दिनांक .....प्रदत्तम्

शुल्कलिपिकस्य नाम..... **ह0लिपिकस्य**

प्रवेश-आवेदन-पत्रेण सह संलग्नप्रमाणपत्राणां अनुक्रमणिका
(समस्तानामङ्कपत्राणां/प्रमाणपत्राणां प्रमाणित-प्रतिलिपय:)

प्रमाणपत्राणि : स्थानान्तंरणम् (टी.सी.), प्रवजन (माइग्रेशन) प्रमाणपत्रम् (मूलप्रति) अन्येषां विश्वविद्यालयानां संदर्भे, चरित्रप्रमाणपत्रम् (मूलप्रति), पूर्वमध्यमा/हाईस्कूल अंकपत्रं तथा प्रमाणपत्रम्, उत्तरमध्यमा/इण्टरमीडिएट/(10+2) अथवा समकक्षपरीक्षाया: अंकपत्रम्, शास्त्री(स्नातक)/आचार्यस्नातकोत्तरपरीक्षाया: अंकपत्रम्, अनुसूचित जाति/जनजाति/अन्य पिछड़ी जाति/विकलांगप्रमाणपत्रम् (उत्तराखण्डराज्यस्यपरिप्रेक्ष्ये), अन्यानि प्रमाणपत्राणि, अनापत्तिप्रमाणपत्रम्/(एन.ओ.सी.) स्थायीसेवारताभ्यर्थिनां कृते

संलग्नप्रमाणपत्राणां सम्पूर्णसंख्या

ह0 छात्र/छात्रा

ह0लिपिकस्य
लिपिकस्य नाम.....
दिनांक .....